शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 16 अंक : 1 1 अगस्त 2023

द्वितीय श्रावण मास, विक्रम संवत् 2080

परामर्श

के.नरहरि

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल

जगदीश प्रसाद सिंघल

शिवानन्द सिन्दनकेरा

जी. लक्ष्मण

महेन्द्र कुमार

❖

सम्पादक

प्रो. शिवशरण कौशिक

❖

संपादक मंडल

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

प्रो. ओमप्रकाश पारीक

डॉ. एस.पी. सिंह

प्रो. दीनदयाल गुप्ता

भरत शर्मा

❖

प्रबन्ध सम्पादक

महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक

बसंत जिंदल

❖

प्रेषण प्रभारी : **नौरंग सहाय 'भारतीय'**

प्रकाशकीय कार्यालय
82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,
जयपुर (राजस्थान) 302001
दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :
शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,
कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली - 110053

E-mail :
shaikshikmanthan@gmail.com
Visit us at :
www.shaikshikmanthan.com

वार्षिक शुल्क ₹ 250/-
दस वर्षीय शुल्क ₹ 2000/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा चित्रों का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है।

वैदिक कृषि व हमारा उन्नत सामर्थ्य ❑ प्रो. भगवती प्रकाश

कृषि आज भी हमारे समावेशी आर्थिक विकास का आधार है। देश की आधी जनसंख्या कृषि पर आधारित है। भारत में 127 कृषि जलवायु प्रखण्ड हैं। औद्योगिक उत्पादों की मांग भी बड़ी मात्रा में किसान की क्रय क्षमता से प्रभावित होती है। इसलिए हमारी आर्थिक प्रगति बड़ी सीमा तक कृषि पर आश्रित है।

4

अनुक्रम

3.	सम्पादकीय	- प्रो. शिवशरण कौशिक
7.	भारतीय ज्ञान परम्परा का व्यावहारिक पक्ष और ...	- डॉ. उदय भान सिंह
11.	भारत के स्वतंत्रता सेनानियों पर स्वामी विवेकानंद..	- उमेश कुमार चौरसिया
13.	प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं मनोविज्ञान...	- प्रो. अंजू सेठ
20.	मानविकी और भारतीय ज्ञान परम्परा	- डॉ. शशि शेखर दास
22.	भारतीय ज्ञान-परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा-नीति	- रविकान्त सनाढ्य
25.	अमृतकाल और राष्ट्रीय शिक्षा नीति	- धर्मेन्द्र प्रधान
30.	National Eduction Policy Latest ...	- Dr. Anchal Meena
33.	Ancient Indian medicinal sciences ...	- Sunil Kumar Saini
36.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के 3 वर्ष पूर्ण होने पर...	- नरेन्द्र मोदी
40.	Guidelines for Training/Orientation of Faculty on Indian Knowledge Systems	

Embrace Indian Knowledge System, Enrich Higher Education

❑ **Mamidala Jagadesh Kumar**

NEP2020 says for purposes of cultural enrichment and national integration, all young Indians should be aware of the rich and vast array of languages of their country and the treasures that they and their literature contain. Multilingualism encourages empathy and better understanding among people from various linguistic backgrounds. Multilingualism helps build effective communication channels and enhances intercultural exchange, paving the way for mutual regard and partnership.

27

संपादकीय

प्रो. शिवशरण कौशिक
सम्पादक

ज्ञान-मीमांसा, तर्क-मीमांसा और तत्त्व-मीमांसा भारतीय ज्ञान-परंपरा में शोध तथा अन्वेषण के प्रमुख कारक रहे हैं। साहित्य-संग्रह, साहित्यालोचन और साहित्य-निष्कर्षण के क्रम से एक समृद्ध तथा उपपत्ति-केंद्रित अन्वेषण पद्धति से ही प्राचीन भारत के अंतरिक्ष विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, कृषि विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, गणित, ज्योतिष एवं अन्यान्य विषयों के सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ है। ये सिद्धांत अधुनातन ज्ञान की खोज के उपरांत भी न केवल प्रासंगिक बने हुए हैं; अपितु क्रमशः अध्ययन व अन्वेषण का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात विगत कुछ दशकों में भारत की शिक्षा-व्यवस्था की दिशा और दशा बहुत ही विचारणीय रही जिसका परिणाम यह हुआ कि ना तो शिक्षार्थी को ही मौलिक ज्ञान की जिज्ञासा उत्पन्न हुई और ना ही शिक्षा व्यवस्था के नीति नियंताओं को ही इसकी कोई चिंता रही। गाहे-बगाहे जो जहाँ से मिला उसे बिना परीक्षण-प्रयोग के भारत की शिक्षा में लागू किया गया। यह शिक्षा भारत के लिए न तो मौलिक थी और ना ही उपयोगी। यह सच्चाई है और व्यावहारिक भी कि किसी भी देश की शिक्षा उसके भौगोलिक-प्राकृतिक परिवेश, सांस्कृतिक-सामाजिक संरचना तथा ज्ञान विज्ञान के इतिहास व परंपराओं को आगे ले जाने वाली होनी चाहिए। भारत के संदर्भ में इस विकास क्रम में आए अनेक बाधक तत्त्वों के कारण भारतीय दृष्टि की शिक्षा और शोध अग्रगामी होने की अपेक्षा प्रतिगामी अधिक सिद्ध हुए।

इसका एक दुष्परिणाम यह हुआ कि भारत से लाखों विद्यार्थी और कामकाजी लोग दुनिया के विकसित देशों में गए। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय (एमईए) के अनुसार लगभग 32 लाख लोग आज विभिन्न विकसित देशों में अध्ययन अथवा अपने व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु गए हैं और विश्व में सबसे अधिक प्रवासी भारतीय ही हैं। यदि हम भारत में ही भारत की शिक्षा व्यवस्था का एक मजबूत आधार निर्मित कर लेते और सभी शिक्षित युवाओं को बेहतर और समान अवसर उपलब्ध कराने में सक्षम होते तो बौद्धिक-पलायन को काफी हद तक रोका जा सकता था। यदि हम शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाते हुए उच्चतर मानकधारी संस्थानों की स्थापना और उनकी निरंतरता स्थापित कर पाते तो शायद यह ब्रेन-ड्रेन का अपूरणीय बौद्धिक नुकसान भारत को न उठाना पड़ता।

उल्लेखनीय है कि भारत का गुणवान नागरिक दूसरे देशों में जाकर भी अपने परिश्रम, कुशलता, ईमानदारी और कर्मठता से अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सच है कि अवसरों की समुचित उपलब्धता के अभाव में बौद्धिक पलायन अनेक देशों में होता रहा है परंतु यह भारतीयता ही है जिससे निकलने वाला नागरिक दुनिया के दूसरे देशों में जाकर भी अपनी प्रतिभा से उस देश के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। भारत की विश्वबंधुत्व की भावना से ओतप्रोत अनेक शिक्षित-प्रशिक्षित युवक विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने विदेशों में गए हैं और उन्होंने उन देशों के निर्माण में तो अपना योगदान दिया ही है, प्रवासी भारतीय के रूप में अपने तन, मन और धन से भारत को भी समृद्ध किया है। भारतीय संस्कृति में सबसे छोटी इकाई व्यक्ति या मनुष्य नहीं है, अपितु परिवार है। इसी दृष्टिकोण को लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी सामूहिकता और सर्वसमावेशिकता की बात की गई है। 'सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया' जैसे विश्व-कल्याण के सूत्र को शिक्षा नीति में केन्द्रीय स्थान दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के वैश्वीकरण की बात कही गई है। यह बौद्धिक पलायन को रोकने और विदेशों से भारत को जानने वाले युवकों को अध्ययन हेतु आमंत्रित करने का सार्थक प्रयास है। इसी क्रम में एन.ई.पी. में भारत के प्रतिष्ठित 100 विश्वविद्यालयों को विश्व के दूसरे देशों में शिक्षा-कैंपस खोलने की अनुमति के साथ विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ संस्थानों को भारत में कैंपस खोलने की अनुमति दिए जाने का सुझाव है। यही भारत की 'वसुधैव कुटुंबकम्' की धारणा है , यही 'ग्लोबलाइजेशन ऑफ एजुकेशन' की भारतीय अवधारणा है अर्थात् ज्ञान के वैश्वीकरण का भारतीय प्रयास!

संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में ग्लोबलाइजेशन एक ऐसी अवधारणा के रूप में हमारे सामने आती है जिसमें यह कहा गया है कि अब कोई भी संस्कृति संप्रभु नहीं है, बल्कि सभी छोटी-बड़ी संस्कृतियों का अपना महत्त्व है। जो संस्कृति सारवान और मानवोचित होगी उसी का अस्तित्व रहेगा। इन्हीं संदर्भों में भारत के सांस्कृतिक मूल्यों का महत्त्व बढ़ा है। यही सिद्धांत शिक्षा के वैश्वीकरण के संदर्भ में समझा जा सकता है कि पश्चिमी शिक्षा पद्धति के साथ भारतीय ज्ञान-परंपरा का भी महत्त्व बढ़ा है। भारतीय मेधा का भी विश्वभर में सम्मान और महत्ता बढ़ी है। निस्संदेह ग्लोबलाइजेशन के कुछ आकर्षण और विकर्षण दोनों रहे हैं परंतु यह भी सच है कि इसने मानव नियति के अनेक नियामक प्रश्नों को सार्वभौम किया है। आज तकनीक और शिक्षा के डिजिटलीकरण ने शिक्षा के वैश्वीकरण की अपार संभावनाएँ उपस्थित की हैं। ई-लर्निंग, ई-कामर्स, ई-बैंकिंग, ई-मैडिशन, ई-गवर्नेंस के साथ ई-शिक्षा के विकास ने अनेक चुनौतियों के साथ विद्यार्थियों को वैश्विक अवसर भी उपलब्ध कराये हैं। इससे भारत के श्रेष्ठतम ज्ञान-सूत्रों को जानने-समझने में वैश्विक स्तर पर विद्यार्थियों की जिज्ञासा बलवती होगी!❑

वैदिक कृषि व हमारा उन्नत सामर्थ्य

प्रो. भगवती प्रकाश
समूह अध्यक्ष
आयोजना व अनुसंधान
पेसिफिक विश्वविद्यालय
समूह, उदयपुर (राजस्थान)

वैदिक काल से ही भारत में कृषि बहुत उन्नत थी और सभी प्रकार के खाद्यान्नों, दलहनों, तिलहनों, फलों व शाक सब्जियों की प्रचुरता रही है। यजुर्वेद में इस प्रचुरता व फसलों की उच्च गुणवत्ता का प्रचुर विवेचन है । यथा:-

ब्रीहयश्च में यवांश्च में माषाश्च में तिलाश्च में मुद्गाश्च में खल्वाश्च में प्रियङ्गवश्च में अणवश्च में श्यामाकाश्च में नीवारांश्च में गोधूमाश्च में मसूरांश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।12।। यजुर्वेद अध्याय: 18 मन्त्र: 12

अर्थ - मेरे चावल, मेरे साठी के धान, मेरे जौ, अरहर, मेरे उड़द व मटर, मेरा तिल और नारियल, मेरे मूंग और चणे, मेरी कंगुनी और मेरे सूक्ष्म चावल और सामा मेरा मडुआ, पटेरा, चेना आदि छोटे अन्न, मेरे पसाई के चाँवल जो कि बिना बोए उत्पन्न होते हैं और मेरे गेहूँ और मसूर सहित अन्य अन्न, फल व शाक सब संवर्द्धित हों और प्रचुरता में उपजें।। 12।।

अथर्ववेद मे भी जौ, धान, दाल और तिल आदि विविध फसलों की प्रचुरता व गुणवत्ता के लेख हैं।

यथा -

व्रीहिमतं यव मत्त मथो
माषमथों विलम्।
एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय
दन्तौ माहिसिष्टं पितरं मातरंच ।।

सभी प्रकार की कृषि उपजों की प्रचुरता से ही 'भारत' शब्द का निर्वचन या उत्पत्ति भी विश्व के भरण-पोषण में समर्थ राष्ट्र के रूप में की है। मत्स्य आदि कई पुराणों, निरूक्त व आगम शास्त्रों में भारत शब्द का यह निर्वचन प्रचुरता में मिलता है। यथा -

भरणात् प्रजानाञ्चैव
मनुर्भरत उच्यते।
निरूक्त यवचनैश्चैव वर्ष
तद् भारत स्मृतम्।।

(मत्स्य पुराण)

भरणात् प्रजानां सर्वेमहीयां
शुश्रुषणं तदैव भारत
अस उच्यते।।

(निरुक्त)

इन श्लोकों का आशय है कि सम्पूर्ण विश्व के भरण पोषण में समर्थ हाने से यह भारत कहलाता है।

वैदिक कृषि की समुन्नत विधियाँ

वैदिक काल में भूमि को जोतकर बीज बोने योग्य कर बीजों को बोया जाता था। बीज बोने की क्रिया को वपन कहा जाता है। यथा भूमिरावपतं महत (यजुर्वेद 23 / 46) अर्थात् भूमि को अच्छे से जोत कर बीज बोये जाने चाहिए। बुबाई के समय बीज के साथ गोबर की खाद डाली जाती थी, जिसे करीष कहते थे। सजग्माना अबिश्युषीरसिमन् गोष्ठेन करीषिणी:। वैदिक युग में अत्यन्त विशाल व उन्नत हल होते थे और भूमि की जुताई के लिए हल ही प्रमुख साधन था। ऋग्वेद में भी जुताई का निदेश है -

एवं वृकेणश्विना वपन्तेषं
दुहंता मनुषाय दस्त्रा।
अभिदस्युं वकुरेणा
धमन्तोरू ज्योतिश्चक्रथुरार्याय।।

अथर्ववेद में छ: बैल वाले हल, आठ बैल वाले हल और बारह बैलो वाले हल का उल्लेख मिलता है। इयं यवमष्टायोगै: षडयोगेभिरचरकृषु:। इसके अतिरिक्त वेद में विविध प्रकार के हलों को सीर, सील, लांगन आदि भिन्न-

भिन्न नामों से भी जाना जाता था। पकड़ने वाली मूंठ को वेद में 'त्सरू' कहा गया है। लांगलम् पवीरवत् सुशीमं सोमसत्सरु। किसान या कृषक के लिए वेदों में कीनाश और सीरपति आदि कई शब्द हैं। 'कीनाश' से ही किसान शब्द बना है। यथा शुनं सुफाला विकृषन्त भूमिं शुनं कीनाशा अभियन्तु वाहैः।

वेदों में उन्नत कृषि शब्दावली

हल का सुन्दर फाल भूमि की जुताई करने में सहायक होता था। इस फाल के लिए ऋग्वेद में 'स्तेग' शब्द का प्रयोग हुआ है जो भूमि में प्रविष्ट होकर खुदाई करता है। स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वी। हल द्वारा जुती हुई भूमि में जो रेखाएँ बनती है इस रेखा को 'सीता' कहा जाता था। यथा इन्द्रः सीतां निगृहणातु तां पूशाभिरक्षतु। इन्द्र हल की रेखा को पकड़े जुते हुए खेत को वृष्टि द्वारा संसिक्त करें पूषा (देवता) उसकी रक्षा करे वह हल की रेखा रसयुक्त होकर हमें आगे आने वाले समय में अन्न रस प्रदान करें। वेदों में कृषि के लिए कर्षण अर्थात् जोतना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। भूमि को मृदु एवं बोने योग्य बनाने के लिए अनेक बार कर्षण अर्थात् जोतने को आवश्यक बताया है। कर्षण कार्य या जुताई से तैयार की गयी भूमि में ही बीज बोने का निर्देश है और जोतने के बाद बीज बोने की प्रक्रिया को वपन कहा जाता था। उत्तम कृषि कार्य के लिए भूमि का विस्तृत रीति से तैयार किया जाना आवश्यक बताया है। इसीलिए वेदों में कर्षण या जुताई आदि के पश्चात् खेतों में बीज बोने का उपदेश दिया है। यथा – युनक्त सीरा वि युगातनोत कृतेयौनौ वपतेह बीजम्। प्रमाणित शब्दावली की दृष्टि से यजुर्वेद में कर्षण क्रिया के द्वारा उत्पन्न अन्न के लिये ही 'कृष्टपच्या' शब्द का प्रयोग हुआ है तथा बिना कर्षण (जुताई) से उपजाए अन्न के लिए 'अकृष्टपच्या' शब्दों का उल्लेख मिलता है– कृष्टपच्या में अकृष्टपच्याश्च में

कृषि आज भी हमारे समावेशी आर्थिक विकास का आधार है। देश की आधी जनसंख्या कृषि पर आधारित है। भारत में 127 कृषि जलवायु प्रखण्ड हैं। औद्योगिक उत्पादों की मांग भी बड़ी मात्रा में किसान की क्रय क्षमता से प्रभावित होती है। इसलिए हमारी आर्थिक प्रगति बड़ी सीमा तक कृषि पर आश्रित है।

यज्ञेन कल्पन्ताम्। बपन (बोने) के पश्चात् भूमि को सींचा जाना आवश्यक था। सींचने मे भी अथर्ववेद में घृत और शहद से भूमि को सम्पोषण का वर्णन मिलता है– सा नः सीते प्यसाभ्याववृत्सवोर्जस्वती घृतवत पिन्वतमाना। अर्थात् घी और शहद के द्वारा विहित रीति से सम्पोषित भूमि हमें उत्तम रस युक्त फसल से पूर्ण करे।

अथर्ववेद में भी गौमय या गोबर व पंचगव्य की खाद के प्रचुर सन्दर्भ हैं। अधिक अन्न पैदा करने के लिए लोग खाद का भी उपयोग करते थे –

संजग्माना अबिभ्युषीरस्मिन्
गोष्ठं करिषिणी।
बिभ्रती सोभ्यं
मध्वनमीवा उपेतन।।

कृषि विज्ञान व शरीर विज्ञान पर संयुक्त उन्नत चिन्तनः

वैदिक कृषि में केवल कृषि उत्पादन पर ही एकाकी चिन्तन नहीं होकर उन कृषि फसलों की स्वास्थ्य रक्षा में कैसे अधिकतम योगदान हो, इसका भी चिन्तन है। अन्नादि कृषि उपजों की मृदुताः कृषि उपज उन्नत व पोषक हो इसके अनेक मन्त्रों मे यजुर्वेद का मंत्र 4.10 और सातवलेकर जी का भाष्य यहाँ विचारणीय है –

ऊर्गस्याङ्गिरस्यूर्णम्रदाऽऊर्ज मयिं धेहि। सोमंस्य नीविर्रसि विष्णोः शर्मांसि शर्म यज?मानस्येन्द्रस्य योनिंरसि सुऽसस्याः कृषीस्कृधि। उच्छ्रयस्व

वनस्पतऽऊर्ध्वो मां पाह्यक्हंसऽआस्य यज्ञस्योदृचः।।

यजुर्वेद 4.10.77

भावार्थ : 'ऊर्ज' का अर्थ ऊर्जा पूर्ण रस, जल, अन्न, शक्ति है। 'आंगिरसी ऊर्क' का अर्थ सा है कि 'जो रस शरीर के अंग प्रत्यंगों में है उसका वीर्य और बल बढ़ाने वाला रस या अन्न'। शरीर में बल बढ़े यह मनुष्य चाहता है, परंतु यह बल योग्य अन्न और रस के सेवन से बढ़ने वाला है यह भी मनुष्य को मन में धारण करना चाहिए। अन्न भक्षण करने के लिये पा तैयार करना चाहिए कि जो मृदु हो, शुष्क व रसहीन न हो। सातवलेकर जी इसकी व्याख्या में लिखते हैं कि उत्तम फल जिससे उत्पन्न होते हों, ऐसी कृषि कर। सस्य धान्यका और फलका वाचक शब्द है। इसलिए ऐसी कृषि कर कि जिससे व उत्तम धान्य प्राप्त हों और उत्तम फल मिलें। यह इसलिए कि फलों के रसके सेवन से भी इन्द्रशक्ति का विकास होता है। इसलिए 18 फल पूर्ण विकसित मिलें ऐसी खेती करनी चाहिए। धान्य के विषय में भी वही बात है। उत्तम कृषि से उत्तम फल मिलें, उनके रसके सेवन से अपने अंदर इन्द्र की शक्ति बड़े और व्यापक परमेश्वर के सुखदायक रस से हम हृष्टपुष्ट और नीरोग होते रहें इत्यादि पूर्व मंत्र भागों से संबंध यहाँ देखना चाहिए।

सातवलेकर जी इसी मन्त्र की व्याख्या में और स्पष्ट करते हैं कि वनस्पतियाँ ऊपर ऊँची अच्छी तरह बढ़, उत्तम रसदार हों, उनके सेवन से पूर्वोक्त मंत्रों में कहे सामर्थ्य हमें प्राप्त हो और हमारा पाप से बचाव हो (अंहसः पाहि)। इस यज्ञ की समाप्ति तक (यज्ञस्य उदृचः) हमारा पापसे बचाव हो, ऐसा यहाँ कहा है। एक यज्ञ होने के बाद दूसरा यज्ञ शूरू होता है और मनुष्य पूर्ण आयु भी एक शतसांवत्सरीक यज्ञ है। इस तरह विचार करने से पता लगेगा कि हमारी पापसे रक्षा सदा ही होनी चाहिए यह इस प्रार्थना का मुख्य उद्देश्य है। ऐसी ही प्रार्थनाएँ स्थान-स्थान पर हैं, इसका यही कारण है।। 10।।

वेदों में औपचारिक कृषि शिक्षण का सन्दर्भ

वेदों में अनेक मंत्र स्पष्ट संकेत करते हैं कि उस काल में कृषि विज्ञान व प्रौद्योगिकी के अध्यापन-अध्ययन का चलन रहा होगा। स्थान सीमावश यहाँ एक ही श्लोक दिया जा रहा है। यथा:

शुनांसीराविमां वाचं जुषेथां
यद्दिवि चक्रथुः पयः।
तेनेमामुपं सिञ्चतम् ।।

ऋग्वेद 4.57.5

भावार्थ - खेती करने वाले जन प्रथम खेती के करने की विद्या को ग्रहण करके पश्चात् यथायोग्य खेती कर धन और धान्य से युक्त सदा हों।। 5।।

ऋग्वेद विश्व की प्राचीनतम पुस्तक है। उसमें कृषि विज्ञान व प्रौद्योगिकी के प्रचुर सन्दर्भ हैं। ऋग्वेद का चतुर्थ मण्डल विशेष पठनीय है।

शुनं वाहाः शुनं नरः
शुनं कृषतु लांगलम्।
शुनं वरत्रा बध्यंतां
शुनमष्टामुदिंगय।।

ऋग्वेद 4.57.4।।

अर्थः खेती करने वाले उत्तम जन उत्कृष्ट हल आदि यन्त्रों, उपकरणों अन्य सामग्रियों बलशाली बैलों और सुपरिष्कृत बीजों से स्मयक जुताई पूर्वक उत्तम पोषक अन्न व सभी प्रकार की फसलों को उत्पन्न करें।

शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमि।
शुनं कीनाशा अभियन्तु वाहैः।।
शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः।
शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम्।।

ऋग्वेद 4.57.8

अर्थ-जैसे लोहे के फाल तैयार कर उससे बनाई गई भूमि के खोदने के लिये वस्तुएँ बैल आदिकों के द्वारा हम लोगों के लिये भूमि को सुखपूर्वक खोदें कृषिकर्म्म करने वाले सुख को प्राप्त हों मेघ मधुर आदि गुण से और जलों से सुख को वर्षावे, वैसे अर्थात् सुख देने वाले स्वामी और भृत्य कृषि कर्म करने वाले तुम दोनों हम लोगों में सुख को धारण करो।। 18।।

कृषि का वर्तमान महत्त्व

कृषि आज भी हमारे समावेशी आर्थिक विकास का आधार है। देश की आधी जनसंख्या कृषि पर आधारित है। भारत में 127 कृषि जलवायु प्रखण्ड हैं। औद्योगिक उत्पादों की मांग भी बड़ी मात्रा में किसान की क्रय क्षमता से प्रभावित होती है। इसलिए हमारी आर्थिक प्रगति बड़ी सीमा तक कृषि पर आश्रित है। ❑

भारतीय ज्ञान परम्परा का व्यावहारिक पक्ष और पंडित दीनदयाल उपाध्याय का योगदान

डॉ. उदय भान सिंह
सह आचार्य, दीन दयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश धर्मशाला, जिला-कांगड़ा (हि.प्र.)

भारतीय जीवन मूल्य तथा यहाँ की ज्ञान परंम्परा सदियों से विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते रहे हैं। यही कारण है कि दुनिया के अनेक ज्ञान पिपासु मूर्धन्य विद्वानों ने समय-समय पर भारत की ज्ञान अर्जन यात्रा की तथा न केवल यहाँ रहकर ज्ञान अर्जित किया बल्कि जाते हुए अपने साथ भारी मात्रा में ज्ञान से परिपूर्ण साहित्य भी लेकर गए तथा रास्ते भर बाँटते हुए अपने देशों मे भी जाकर प्रचारित, प्रसारित और वितरित किया। इसी क्रम में चीन के अनेक विद्वान, मध्य युरोप, पश्चिमी एशिया व अन्य देशों के यात्री शामिल हैं। इतना ही नहीं बल्कि भारत के धर्म प्रचारकों ने भी भारतीय ज्ञान परंम्परा को दक्षिण-पूर्व के देशों सहित उत्तर, उत्तर पूर्व, पश्चिमी एशिया व अन्य देशों तक पहुँचाया। साथ ही दुनिया ने भारत की ज्ञान संपदा से भरपूर लाभ भी उठाया। मध्य काल में जब भारत पर विदेशी आक्रमण बढ़ गए और आपसी फूट की वजह से जहाँ-तहाँ विदेशी शासन स्थापित हो गया, तब भारतीय ज्ञान परंम्परा के प्रचार-प्रसार में न केवल विपरीत प्रभाव पड़ा बल्कि ज्ञान की धार भी कुंद पड़ गई, मगर रुकी नहीं।

विपरीत वातावरणीय स्थिति में भी अनेक महापुरुषों, विद्वानों, संतों और महंतों ने भारतीय ज्ञान परंम्परा की गंगा में अपने योगदान रूपी आंचवन से भारतीय ज्ञान को समृद्ध बनाए रखा। गोस्वामी तुलसीदास, नरसिंह मेहता, सूरदास जी, गुरु नानक देव जी व दस गुरु परंम्परा, रहीम व उत्तर मध्य काल में आधुनिक शिक्षा प्राप्त महापुरुषों यथा राजा राम मोहन राय, विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद जी सहित अनेक महापुरुषों ने अपनी लेखनी, उद्बोधन, भारत भ्रमण व अन्य प्रयासों से न केवल भारत की समृद्ध ज्ञान परंम्परा से भारत के जन मानस को झंकृत किया बल्कि भारत के सोए भाग्य को जगाने का सफलतापूर्वक प्रयास भी किया। स्वामी विवेकानंद जी जैसे महान् संतों ने तो विदेशी धरती पर जाकर भारतीय ज्ञान का जो शंखनाद किया उससे पूरी दुनिया चकित रह गई। यह क्रम बाद के वर्षों में भी जारी रहा। पराधीनता के काल में भी भारतीय ज्ञान परंम्परा की गंगा बहती ही रही।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय और भारतीय ज्ञान परंम्परा

स्वतंत्रता पश्चात राजनीतिक सत्ता के साथ-साथ भारतीय मनीषा इस बात को लेकर चिंतित थी कि अब भारत के भविष्य की दिशा क्या हो? भारतीय राज-काज में हिस्सा ले रहे राजनीतिज्ञों में भी अनेक प्रकार के मतभेद इस विषय में उपस्थित थे। राजनीतिक सत्ता से दूर गांधी जी का दर्शन पूरी तरह से भारतीय परंपरा पर आधारित था। जबकि नेहरू और उनके समर्थकों का दृष्टिकोण पश्चिम और समाजवाद से प्रेरित था। गांधी के निधन के साथ ही भारत का शासन और भवितव्य अब पूरी तरह से नेहरू के हाथ आ गया था। नेहरूवादी अर्थव्यवस्था, राजनीति, प्रशासन और अन्य

व्यवस्थाओं की परिणति क्या रही,उसे हम सब जानते ही हैं ।

मगर इसी बीच अनेक दृष्टा ऐसे भी हुए जो भारत की समस्याओं का समाधान भारतीय दृष्टि, अनुभव और उपस्थित ज्ञान परंपरा में ही देखते थे। वह बात अलग रही कि उनके क्रियान्वयन का अवसर तब उन्हें नहीं मिला। ऐसे दूर दृष्टा थे पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म राजस्थान में हुआ था (कुछ लोग उत्तर प्रदेश के मथुरा जिला को भी मानते हैं) बाल्य काल में ही माता पिता के निधन से पंडित दीनदयाल उपाध्याय का पालन-पोषण नाना नानी तदोपरान्त मामा मामी के यहाँ हुआ। बचपन से ही मेधावी दीनदयाल ने काफी दिक्कतों का सामना करते हुए पढ़ाई की तथा उच्च शिक्षा के दौरान ही उनका संपर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दूरदर्शी प्रचारकों से हुआ तथा नाना जी देशमुख के माध्यम से तात्कालीन सरसंघचालक जी से भी हुआ। परिणाम स्वरूप दीनदयाल जी अपनी पढ़ाई के बीच में ही संघ के प्रचारक बन गए। बाद में संघ योजना से उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया तथा 1952 में गठित भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य भी बने। गहन चिंतन-मनन करने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय का ध्यान जब भारतीय राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज व्यवस्था व अन्य क्षेत्रों की ओर व्याप्त समस्याओं पर गया तो उन्होंने पाया कि इन समस्याओं का निराकरण भारतीय दृष्टि और दर्शन से ही संभव है। गहन अध्ययन के बाद उन्होंने अनेक विचार राष्ट्र के समक्ष रखे जो तात्कालीन परिस्थितियों मे भारत के लिए अंत्यंत श्रेयस्कर थे। वह बात अलग है कि उस समय परिस्तिथि ऐसी नहीं थी कि उनका क्रियान्वयन हो पाता। परंतु जब-जब राष्ट्रीयता व भारतीय संस्कृति से प्रभावित सत्ता प्रतिष्ठान को अवसर मिला तब- तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि पर आधारित शासन व्यवस्था, नीति निर्धारण का संकल्प लेकर उन्हें भरसक क्रियान्वित करने का सफलतापूर्वक प्रयास किया गया है। वर्तमान केन्द्र व अनेक राज्यों की सरकारों की विभिन्न नीतियाँ और उनका क्रियान्वयन इसका उदाहरण हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का अधिष्ठान भी, यदि ध्यान से विवेचना करें तो, वह भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के व्यावहारिक व भारतीय ज्ञान परंम्परा पर ही आधारित है।

क्या है पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि?

वास्तव में यदि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों, दर्शन और दृष्टि का विशद अध्ययन हम करते हैं तो पाते हैं कि पंडित जी ने भारतीय राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज, पत्रकारिता, विदेश नीति व अन्य पर जो भी विचार व्यक्त किए वह कोई नए नहीं हैं बल्कि वह सब दृष्टि और दर्शन भारतीय वांगमय, परंम्परा व संस्कृति में पहले से ही व्याप्त रहे हैं। पंडित जी ने तो तात्कालिक परिस्थितियों के अनुसार उनकी सहजता से व्याख्या करके उनके समूल क्रियान्वयन की बात रखी थी, जो कि व्यवहार्य थी। पंडित जी ने व्याप्त भारतीय अनुभवों, ज्ञान, परंपरा के ही अनुसार अपनी दृष्टि रखी जो उस समय की समस्याओं के समाधान के लिए न केवल अनुकूल थीं बल्कि राष्ट्र सहित मानव मात्र के लिए हितकारी थी। इसका प्रमाण यह है कि जब-जब पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों पर आधारित नीति व कार्यक्रम बनाए गए, उन्होंने व्यापक सफलता प्राप्त किया है। वर्तमान केन्द्र सरकार की भी अनेक ऐसी नीतियाँ और योजनाएँ हैं जो नितांत पंडित जी के विचारों पर ही आधारित और क्रियान्वित हैं तथा जिनके प्रभाव दूरगामी साबित हो रहे हैं।

भारत की ज्ञान परंपरा अर्वाचीन है । इस परंपरा ने न केवल विश्व को प्रभावित किया है बल्कि दुनिया को प्राचीन काल से ही आकर्षित भी किया है । दुनिया के विद्धानों ने भारतीय धर्म, ज्ञान, अध्यात्म और दर्शन से बहुत कुछ हासिल कर अपने-अपने देशों को समृद्ध किया है । भारत के अनेक महापुरुषों ने भी भारत की अनवरत ज्ञान परंपरा से बहुत कुछ सीखा व उसके ही प्रकाश मे समयानुसार अपने बहुमूल्य विचार समाज को दिए ।

पंडित दीनदयाल के प्रमुख विचार

अंत्योदय : पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रमुख विचारों में से एक है अंत्योदय। अंत्योदय का अर्थ है- अंत+उदय अर्थात् अंत का उदय। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि समाज की अंतिम पंक्ति में जो खड़ा है, उसका सर्वांगीण विकास हो, ऐसी भावना से परिपूर्ण प्रयत्न, नीति और कार्यक्रम तथा उनका प्रभावी क्रियान्वयन। पंडित जी का मानना था कि समाज के सबसे दीन हीन और वंचितों की चिंता सर्वप्रथम होनी चाहिए क्योंकि वही सबसे ज्यादा उपेक्षित और अपेक्षित हैं। पहली, दूसरी, तीसरी व अन्य पंक्तियों की चिंता से पहले जो अंतिम पंक्ति में हैं, उनका कल्याण व उनकी प्रारंभिक व अति आवश्यकताओं की पूर्ति बहुत जरूरी है। अगर उन्हें मौके पर अपेक्षित सहायता मिलती है तो वह धीरे-धीरे मुख्य धारा में न केवल आने में सक्षम होंगे बल्कि समाज व्यवस्था के विकास में भी उनका योगदान मिल पाएगा। इस तरह पहली पंक्ति से लेकर अंतिम शक्तियों का सहयोग समाज को मिलेगा तभी सर्वांगीण विकास का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। देखा जाए तो पंडित जी का यह विचार भारतीय परंपरा में विद्यमान 'सर्वे भवंतु सुखिन:' के सिद्धांत पर ही आधारित है। यही कारण है कि आज भारत में चल रही अनेक जन कल्याणकारी योजनाओं की प्रेरणा पंडित जी के विचार ही हैं।

एकात्म मानव दर्शन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का यह

दर्शन भी भारत की समृद्ध ज्ञान परंपरा से ही उद्धृत या कहना चाहिए कि उसी से प्रभावित व प्रेरित है। भारतीय परंपरा मे व्यक्ति ही परिवार की इकाई है। परिवार से समाज व समाज से राष्ट्र और फिर विश्व व ब्रह्माण्ड है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का 'एकात्म मानव दर्शन', सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों ही दृष्टि से, एक सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक जीवन दर्शन है। इस दर्शन के अनुसार, 'मानव' सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के केन्द्र में अवस्थित रह कर, एक 'सर्पालाकार मण्डलाकृति' के रूप में, अपने स्वयं के अतिरिक्त, क्रमशः परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के प्रति, अपने बहुपक्षीय उत्तरदायित्वों का निर्वहन करता हुआ 'प्रकृति' (ब्रह्माण्ड) के साथ संग्रथित होता हुआ, एकीकृत हो जाता है। 'व्यष्टि' से 'समाष्टि' की ओर गतिमान 'व्यक्ति' के इस बहुआयामी सृजनात्मक व्यक्तित्व का 'प्रकृति' के साथ, तादात्म्य स्थापित होना ही, एकात्म मानव दर्शन के मूल में निहित है। पंडित जी के अनुसार मानव ही, उस ब्रह्माण्ड अर्थात् समष्टि का अणु अर्थात् व्यष्टि इकाई है, जिसके सर्वांगीण विकास के बिना राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। अथर्ववेद में हमारे ऋषि भी कह चुके हैं ''अभिवर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम्'' अर्थात् सभी प्रजा दुग्धादि धनधान्य से पुष्ट हो तथा राष्ट्र के साथ विकसित हो।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अन्य विचारों पर भारतीय मनीषा का प्रभाव

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के उक्त कालजयी विचारों के अलावा भी राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय, धर्म, राजनीति, विदेश नीति, शिक्षा नीति सहित मानव व समाज जीवन से संबंधित अभूतपूर्व विचार व दृष्टि हमें मिलती। स्थानाभाव के कारण सब की तथा विस्तार से चर्चा यहाँ संभव नहीं हो पाएगी, किंतु सार संक्षेप में कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख हो सकता है।

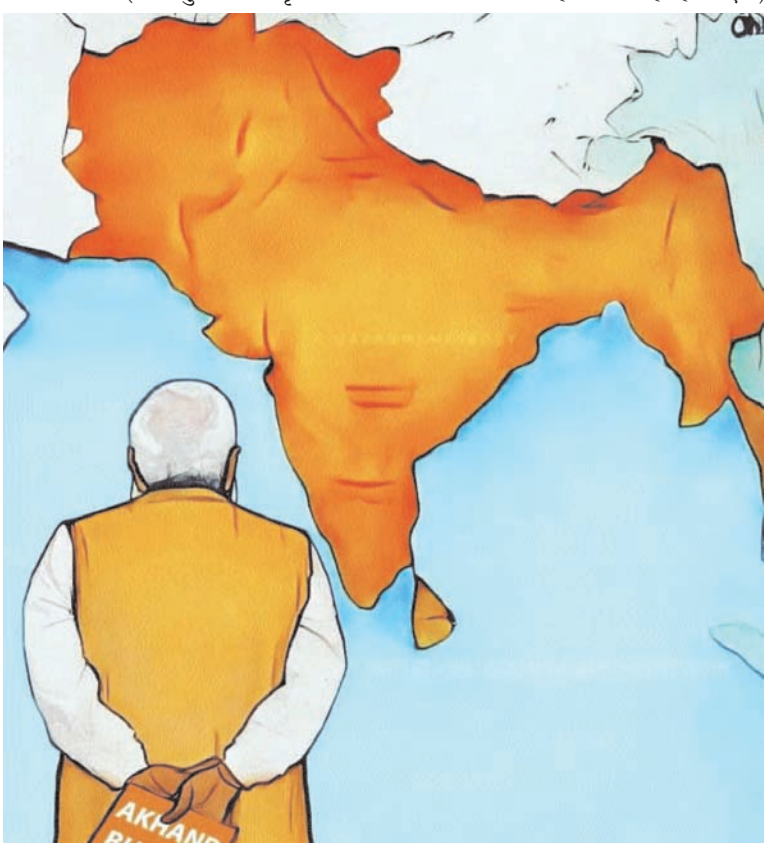

दीनदयाल उपाध्याय स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति के प्रमुख शिल्पियों में से थे। सामान्यतः उनकी ख्याति सक्रिय राजनीतिज्ञ और कुशल संगठनकर्ता के रूप में रही हैं, पर इससे अधिक वे एक महान विचारक और चिंतक थे। उनकी वैचारिक आभा पर भारतीय मनीषा और संस्कृति की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है। इतना ही नहीं विद्वानों ने यह भी स्वीकार किया है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र पर अपने जो भी विचार व्यक्त किये। उन पर भारतीय ज्ञान परंम्परा का ही असर था कि उनके सभी विचार आज पथ प्रदर्शक बन कर उभरे हैं। उनके यह सब विचार उनके दीर्घकालीन अनुभव की देन तो थे ही, साथ ही भारत की समृद्ध ज्ञान विरासत का समयानुसार प्रस्फुटन भी था। कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं की बात करना यहाँ समीचीन होगा-

राष्ट्र निर्माण

राष्ट्र निर्माण अथवा संगठन को लेकर पश्चिमी विद्वानों के साथ-साथ ही भारतीय विद्वानों में भी मतैक्य नहीं है। जबकि भारत की ज्ञान परंपरा सटीकता से राष्ट्र निर्माण अथवा संगठन को संसूचित करती है। इसीलिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का मानना है कि राष्ट्र एक स्वाभाविक संगठन है। मानव-शरीर के सभी अवयव जिस प्रकार स्वाभाविक रूप से क्रियाशील रहते हैं, उसी प्रकार राष्ट्र के विभिन्न घटक भी राष्ट्र सेवा के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। एक राष्ट्रभाव की विस्मृति के कारण यदि घटक अंग शिथिल पड़ते हैं, तो राष्ट्र का पतन होता है और यदि ये पूरी तरह निष्क्रिय हो गये तो संपूर्ण राष्ट्र के विनाश का कारण बनते हैं।

सांस्कृतिक भारत न कि राजनीति भारत

अपने कोटिशः वर्षों से प्राप्त ज्ञान परंपरा से आप्लावित तथा सांस्कृतिक वैविध्यता से परिपूर्ण भारत ही पं दीनदयाल

उपाध्याय का विचार था। उनका कहना था कि यदि भारत की आत्मा को समझना है तो राजनीति अथवा अर्थनीति के चश्मे से न देखकर सांस्कृतिक व भारतीय धर्म, दर्शन व अध्यात्म के दृष्टिकोण से ही देखना होगा।

साधना स्वराज्य की

एक देश व देशवासियों के लिए स्वराज्य उसका प्राण है और कटिबद्ध देशवासी इसके लिए सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं। भारत का स्वातंत्र्य समर तथा कोटि-कोटि बलिदान इसका ज्वलंत उदाहरण है। स्वराज्य समाज की वह स्थिति है, जिसमें समाज अपने विवेक के अनुसार निश्चित ध्येय की ओर बढ़ सकता है। इसीलिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय के समग्र चिंतन मे ही स्वराज्य केन्द्र में है। स्वराज्य किस तरह से जीवंतता के साथ उत्कर्ष प्राप्त करे, यही उनकी व्यवस्था का ध्येय होना चाहिए।

राष्ट्र के लिए व्यक्ति साधन है

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार व्यक्ति राष्ट्र की आत्मा को प्रकट करने का एक साधन है। इस प्रकार व्यक्ति अपने स्वयं के अतिरिक्त राष्ट्र का भी प्रतिनिधित्व करता है। इतना ही नहीं, अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए राष्ट्र जितनी भी संस्थाओं को जन्म देता है, उसका उपकरण व्यक्ति ही है और इसलिए वह उनका भी प्रतिनिधि है। राष्ट्र में व्यापक जो समष्टियाँ हैं, जैसे मनुष्य उनका प्रतिनिधित्व भी व्यक्ति ही करता हैं।

अभिन्न हैं व्यक्ति व समाज

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना है कि व्यक्ति तथा समाज में किसी प्रकार विरोध नहीं है। विकृतियाँ तथा अव्यवस्था की बात छोड़ दें, उन्हें दूर करने के उपाय भी जरूरी होते हैं, किन्तु वास्तविक सत्य यह है कि व्यक्ति और समाज अभिन्न और अभिवाज्य हैं। सुंसस्कृत अवस्था यह है कि व्यक्ति अपनी चिन्ता करते हुए भी समाज की चिन्ता करेगा तभी समाज का उत्कर्ष संभव हो पाएगा।

राष्ट्र के अनिवार्य तत्त्व

पंडित जी ने किसी राष्ट्र के लिए चार आवश्यक तत्त्व बताये हैं- प्रथम भूमि और जन जिसे देश कहते हैं। द्वितीय, सबकी इच्छा शक्ति अर्थात् सामूहिक जीवन का संकल्प। तृतीय, एक व्यवस्था जिसे नियम अथवा संविधान कहा जा सकता हैं, जिसे वे धर्म कहते हैं तथा चतुर्थ है जीवन आदर्श। इन चारों के सम्मिलित स्वरूप को ही राष्ट्र कहा जाता है। राज्य और व्यक्ति के बीच सावयवी एकता बताते हुए उन्होंने कहा, जिस प्रकार व्यक्ति के लिए शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा जरूरी है तथा इन चारों से मिलकर व्यक्ति का निर्माण होता है, उसी प्रकार संकल्प, धर्म और आदर्श के समुच्चय से राष्ट्र का निर्माण होता है। पंडित जी की इस व्याख्या से राष्ट्र को लेकर जो विशुद्ध भारतीय परंपरा रही है, वह स्पष्टत परिलक्षित होती है।

चिति ही राष्ट्र का केन्द्र बिन्दु

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विचार है कि राष्ट्र की भी एक आत्मा होती है। इसे 'चिति' कहा जाता है। यह किसी समाज की जन्मजात प्रवृति होती है। इसे लेकर ही प्रत्येक समाज का निर्माण होता हैं। किसी भी समाज की संस्कृति की दिशा का निर्धारण इसी चिति के अनुकूल ही होता है। अर्थात् जो चीज इस चिति के अनुकूल होती है वह संस्कृति में सम्मिलित कर ली जाती है।

राष्ट्र और राज्य अलग-अलग हैं

दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्र एवं राज्य में अंतर किया है। उनका मत है कि राष्ट्र एक स्थायी सत्य है। राष्ट्र की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए राज्य उत्पन्न होता है। राष्ट्र निर्माण केवल नदियों, पहाड़ों, मैदानों या कंकड़ों के ढेर से ही नहीं होता और न ही यह केवल भौतिक इकाई ही है। इसके लिए देश में रहने वाले लोगों के हृदयों में उसके प्रति असीम श्रद्धा की अनुभूति होना प्रथम आवश्यक है। इसी श्रद्धा की भावना के कारण हम अपने देश को मातृभूमि कहते हैं। जबकि उपाध्याय के अनुसार राज्य कृत्रिम है तथा मानव निर्मित एक संस्थान है।

राज्य की आवश्यकता दो परिस्थितियों में होती है। पहली आवश्यकता तब होती है जब राष्ट्र के लोगों में कोई विकृति आ जाए। ऐसी स्थिति में उत्पन्न समस्याओं के नियमन के लिए जटिलता उत्पन्न हो जाती है तथा सार्वजनिक जीवन में व्यवस्था का निर्माण करना आवश्यक हो। निर्बलता, असहायता, दरिद्रता का लाभ शक्ति सम्पन्न तथा साधन सम्पन्न वर्ग न उठा सकें, सब न्याय की सीमाओं में अपने कार्य को करें, इसके लिए राज्य का निर्माण किया जाता है। राष्ट्र के अंदर अनेक राज्य हो सकते हैं तथा उनकी अपनी-अपनी शासन व्यवस्थाएँ हो सकती हैं। मगर राष्ट्र तो एक अनुभूति है, एक ऐसा सूत्र है जो एकात्म की भावना से रचा और बसा होता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत की ज्ञान परंपरा अर्वाचीन है। इस परंपरा ने न केवल विश्व को प्रभावित किया है बल्कि दुनिया को प्राचीन काल से ही आकर्षित भी किया है। दुनिया के विद्वानों ने भारतीय धर्म, ज्ञान, अध्यात्म और दर्शन से बहुत कुछ हासिल कर अपने-अपने देशों को समृद्ध किया है। भारत के अनेक महापुरुषों ने भी भारत की अनवरत ज्ञान परंपरा से बहुत कुछ सीखा व उसके ही प्रकाश में समयानुसार अपने बहुमूल्य विचार समाज को दिए। ऐसे ही अनेक महापुरुषों और विचारकों मे पंडित दीनदयाल उपाध्याय भी शामिल हैं, जिन्होंने तात्कालिक परिस्थितियों को देखते हुए भारत के सर्वांगीण विकास का चित्र अपने विविध विचारों से रेखांकित कर शासन व्यवस्था का पथ प्रदर्शित किया। पंडित जी के इन सब विचारों और दृष्टि का आधार पश्चिम की अधकचरी या अन्य कोई उधार की ली गई विचार धारा नहीं थी बल्कि समृद्ध भारतीय ज्ञान परंपरा ही थी।

भारतीय ज्ञान परंपरा में अद्भुत शक्ति है। इसका आज की और भावी पीढ़ी को ठीक ढंग से परिचय कराने की महती आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को समाहित किया गया है। अपेक्षा है भावी पीढ़ी इससे आशातीत लाभ लेकर भारत का भवितव्य पुनश्च गौरवशाली पथ पर अग्रसर करेगी। ❑

भारत के स्वतंत्रता सेनानियों पर स्वामी विवेकानंद का प्रभाव

उमेश कुमार चौरसिया
क्षेत्रीय संयुक्त मंत्री,
अखिल भारतीय साहित्य परिषद राजस्थान

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन पर स्वामी विवेकानंद के प्रभाव का वर्णन स्वयं स्वतंत्रता के नायकों ने किया है। गांधीजी जब 1901 में पहली बार कांग्रेस अधिवेशन में हिस्सा लेने कलकत्ता पहुँचे तो उन्होंने स्वामी जी से मिलने का प्रयास भी किया था। अपनी आत्मकथा में गांधी लिखते हैं कि उत्साह में वह पैदल ही बेलुर मठ पहुँच गए, किन्तु यह जानकर बहुत निराश हुए कि स्वामी जी उस समय कलकत्ता में थे और बहुत बीमार होने के कारण किसी ने मिल नहीं रहे थे। कुछ ही महीनों बाद स्वामी जी ने देह त्याग दी। बाद में 30 जनवरी 1921 को महात्मा गांधी ने बेलुर मठ में स्वामी विवेकानंद की जयंती के समारोह में भाग लिया, तब उन्होंने कहा कि ''उनके हृदय में दिवंगत स्वामी विवेकानंद के लिए बहुत सम्मान है। उन्होंने उनकी कई पुस्तकें पढ़ी हैं और कहा कि कई मामलों में उनके इस महान विभूति के आदर्शों के समान ही हैं। यदि विवेकानंद आज जीवित होते तो राष्ट्र जागरण में बहुत सहायता मिलती। किंतु उनकी आत्मा हमारे बीच है और उन्हें स्वराज स्थापना के लिए हरसंभव प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें सबसे पहले अपने देश से प्रेम करना सीखना चाहिए और उनका इरादा एक जैसा होना चाहिए। गांधीजी ने एक स्थान पर यह भी बताया था कि अपने ही समृद्ध भाइयों के हाथों 'दबाए गए' दरिद्रों के साथ उन्हें वैसी ही सहानुभूति है, जैसी स्वामीजी को थी: ''स्वामी विवेकानंद ने ही हमें याद दिलाया कि उच्च वर्ग ने अपने ही लोगों का शोषण किया है और इस तरह अपना ही दमन किया है। आप खुद नीचे गिरे बिना अपने ही स्वजातों को नीचा नहीं दिखा सकते।''

ढाका मुक्ति संघ के संस्थापक क्रांतिकारी और कलकत्ता में राइटर्स बिल्डिंग पर धावा बोलने वाले तीन युवा क्रांतिकारियों विनय, बादल और दिनेश के गुरु हेमचंद्र घोष थे। 1901 में जब विवेकानंद ढाका गए तो घोष अपने मित्रों के साथ उनसे मिले थे। अपने संस्मरण में वह लिखते हैं कि स्वामीजी ने उन्हें दोटूक निर्देश दिया था: ''भारत को पहले राजनीतिक स्वतंत्रता मिलनी चाहिए क्योंकि विश्व में कोई भी देश किसी औपनिवेशिक देश का न तो कभी सम्मान करेगा और न ही उसकी बात सुनेगा। और मेरी बात याद रखना कि भारत स्वतंत्र होगा। धरती पर कोई भी ताकत इसे रोक नहीं सकती और मैं मानता हूं कि वह क्षण बहुत दूर नहीं है।'' उन्हें स्वामीजी की यह सलाह भी याद रही: ''सबसे पहले चरित्रवान बनो। यदि तुम माँ भारती की सेवा करना

चाहते हो तो वीर बनो। पहले शक्ति और साहस अर्जित करो, उसके बाद उन्हें पीड़ा से मुक्त कराने चलो।'' हेमचंद्र स्वामी जी को दूर बैठे किसी आदर्श व्यक्ति की तरह नहीं बल्कि भारतीय युवाओं का मार्गदर्शन करने वाले बड़े भाई की तरह याद करते थे, ऐसे व्यक्ति के रूप में याद करते थे, जो देश के लिए इतनी कम आयु में जीवन अर्पण करने वाले क्रांतिकारियों के हृदय के बहुत निकट थे।

स्वामीजी ने राष्ट्रवादी नेता अरविंद घोष के आध्यात्मिक विकास में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और अरविंद घोष ने अंत में परमात्मा की खोज में सांसारिक बंधन त्याग दिए। श्रीअरविंद ने कहा है कि अलीपुर जेल में स्वामीजी की आत्मा से कई बार उनका साक्षात्कार हुआ और आध्यात्मिक चेतना के उच्चतर स्तरों के बारे में स्वामीजी ने उन्हें बताया: ''यह सत्य है कि कारागार में एकांत में ध्यान साधना के समय एक पखवाड़े तक लगातार विवेकानंद की आवाज सुनता रहा, जो मुझसे बात कर रहे थे। मैंने उनकी उपस्थिति भी अनुभव की। वह स्वर आध्यात्मिक अनुभूति के केवल एक विशेष और सीमित किंतु बहुत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के बारे में ही बताता था। उस विषय पर पूरी बात कहते ही वह स्वर शांत हो गया।'' महर्षि अरविन्द को क्रान्ति व योग की प्रेरणा देने वाले भी विवेकानंद जी ही थे। देशभक्ति से ओतप्रोत स्वामीजी के भाषणों द्वारा पैदा की गई विचारों की चिंगारी का असर वीर सावरकर तथा लोकमान्य वाल गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रभक्तों पर भी दिखाई देता है। सावरकर जी ने तो संघर्ष कर अंडमान जेल में भी जो लाईब्रेरी बनवाई उसमें विवेकानंद साहित्य रखवाया। अपने वृहत काव्य सप्तर्षि में सावरकर जी ने लिखा कि निराशा के क्षणों में उन्हें विवेकानंद के विचार ही प्रेरणा देते थे।

कई अन्य राष्ट्रवादी नेता भी विवेकानंद से प्रभावित रहे। अलग-अलग लोगों पर उनका अलग-अलग और बहुआयामी प्रभाव पड़ा था। ये लोग सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों के थे किन्तु स्वामी विवेकानंद के प्रभाव से ही उन्हें भारत के लिए जीने और मरने की प्रेरणा मिली। 1897 में स्वामीजी ने कहा : ''अगले 50 वर्षों के लिए हमारा एक ही ध्येय होना चाहिए - हमारी महान भारत माता।'' और हमने देखा कि ठीक पचास वर्ष बाद भारत को स्वतंत्रता मिल गई!

1901 में बेल्लूर में हुए कांग्रेस अधिवेशन के समय तिलक जी लगातार आठ दिन तक विवेकानंद जी से नियमित मिलते रहे। तिलक जी के लेखों में उसके बाद ही दरिद्र नारायण शब्द का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। अंग्रेजों द्वारा बनाए गए सिडीशन कमीशन की रिपोर्ट में इस भेंट का उल्लेख है।

रामकृष्ण मठ के स्वामी ब्रह्मानंद जी से प्रसिद्ध क्रांतिकारी रासविहारी बोस की नजदीकी थी। मठों से अनेक क्रांतिकारी गिरफ्तार भी हुए। अनुशीलन समिति के सभी क्रांतिकारी, लाहिड़ी, सान्याल, लाला हरदयाल, चन्द्र शेखर आजाद आदि सभी अपने पास विवेकानंद साहित्य रखते थे। अंग्रेज इन सब बातों को संदेह की नजर से देख रहे थे। उन्होंने स्वामीजी के भाषणों की जाँच भी करवाई किन्तु अंग्रेज एक शब्द भी आपत्तिजनक न पा सके। तिलक जी को स्वदेशी का विचार तथा गीता भाष्य की प्रेरणा देने वाले भी विवेकानंद जी थे। नवजीवन प्रकाशन कलकत्ता से प्रकाशित भूपेन्द्र नाथ दत्त की पुस्तक 'पेट्रिओट प्रॉफिट स्वामी विवेकानंद' में उल्लेख है कि अपनी फ्रांसीसी शिष्या जोसेफाईन मोक्लियान से स्वामी जी ने कहा कि क्या निवेदिता जानती नहीं है कि मैंने स्वतंत्रता के लिए प्रयास किया, किन्तु देश अभी तैयार नहीं है, इसलिए छोड़ दिया। देश भ्रमण के दौरान पूरे देश के राजाओं को जोड़ने का प्रयत्न संभवत: स्वामी जी ने किया होगा, जिसका संकेत उक्त चर्चा में मिलता है। स्वामी जी ने आत्मग्लानि में धंसे भारतीय समाज को बाहर निकाला। अल्मोड़ा में बद्रीसहाय बटुकधारी ने पूछा कि आप देशभक्ति की बात करते हो, किन्तु उसका उल्लेख वेद उपनिषद् में कहाँ है? स्वामी जी ने भारत भक्ति का वर्णन करतीं उपनिषदों की ऋचाएँ उन्हें सुनाकर मंत्रमुग्ध कर दिया। स्वामी जी की प्रेरणा के पश्चात उन्होंने उपनिषदों का अध्ययन करने के लिए संस्कृत सीखी और सुप्रसिद्ध 'वैशिक शास्त्र' पुस्तक लिखी। उस पुस्तक का अध्ययन स्व. दीनदयाल उपाध्याय जी ने भी किया। उनके द्वारा प्रतिपादित चिति और विराट की संकल्पना इसी पुस्तक से आई।

कई अन्य राष्ट्रवादी नेता भी विवेकानंद से प्रभावित रहे। अलग-अलग लोगों पर उनका अलग-अलग और बहुआयामी प्रभाव पड़ा था। ये लोग सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों के थे किन्तु स्वामी विवेकानंद के प्रभाव से ही उन्हें भारत के लिए जीने और मरने की प्रेरणा मिली। 1897 में स्वामीजी ने कहा : ''अगले 50 वर्षों के लिए हमारा एक ही ध्येय होना चाहिए - हमारी महान भारत माता।'' और हमने देखा कि ठीक पचास वर्ष बाद भारत को स्वतंत्रता मिल गई!❑

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं मनोविज्ञान - वर्तमान परिप्रेक्ष्य

प्रो. अंजू सेठ
प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
एवं प्राचार्या
सत्यवती महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय ज्ञान परम्परा की धारा अक्षुण्ण रूप से प्रवाहमान होती हुई, युगयुगोत्तर से अपने अमृतमय रूप से सभी को आप्लावित करती हुई सर्वत्र सुख शान्ति का प्रसार करती है। ज्ञानपरम्परा वह अमूल्य धरोहर है, जिसे हमारे ऋषियों ने अपने अनुभवाधार पर प्रस्तुत किया था। वास्तव में वे सभी ऋषि मंत्रद्रष्टा थे- ऋषयस्तु मंत्रद्रष्टारः न तु कर्तारः। उन सभी की वर्षों की साधना, त्याग एवं तपस्या का फलीभूत परिणाम ही सुदीर्घ, सुदृढ़ एवं चिरस्थायी परम्परा के रूप में हमारे सामने उद्भूत हुआ है। वे भविष्यद्रष्टा ऋषि वर्तमान युगीन समस्याओं को पूर्वतः ही देखकर उनका समाधान भी प्रस्तुत कर देते थे।

भारत की ज्ञान परम्परा वर्षों की चिन्तन प्रक्रिया का ही मूर्तरूप है, जिसमें मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष, आयाम एवं संकल्पनाओं पर विचार किया गया। अनेक वैज्ञानिक तथ्यों एवं निष्कर्षों का उत्स भारतीय ज्ञान परम्परा से ही हुआ है। मनोविज्ञान भी मानवीय जीवन का अभिन्न अंग है, जिसके कारण मानव संतप्त भी रहता है तथा अत्यधिक प्रभावित भी होता है। प्राचीन ग्रंथों में उपलब्ध भारतीय चिन्तन पद्धति में विद्यमान मनोविज्ञान विषयक तथ्यों को लेकर उनकी वर्तमान युगीन मनोवैज्ञानिक समस्याओं के निदान में उपयोगी तथ्यों को विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक माध्यम से प्रस्तुत करना ही इस लेख का प्रमुख उद्देश्य है। प्राचीन ग्रंथों वेद, उपनिषद, महाभारत, गीता आदि में निबद्ध मनोविज्ञान सम्बन्धी तथ्यों को जनमानस के अन्तर्मन तक पहुँचाने का पह मेरा विनम्र प्रयास है।

ज्ञान-विज्ञान का प्रत्यक्षतः सम्बन्ध चिन्तन-मनन से है। चिन्तन व मनन की विविध श्रृंखलाओं द्वारा सभी दर्शन एवं विज्ञान उद्भूत होते हैं। चिन्तन परम्परा का उत्तरोत्तर विकास ही ज्ञान की अटूट श्रृंखला का महत्त्वपूर्ण कारण है। वर्तमानयुग में विज्ञान की अनेकानेक शाखाएँ हैं, उन्हीं शाखाओं में जिस शाखा ने जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ी, जिससे जीवन का प्रत्येक पल प्रभावित हुआ, जिस शाखा से समाज का प्रत्येक वर्ग प्रभावित हुआ और उसमें रुचि रखने लगा वह शाखा 'मनोविज्ञान' है। मानव जीवन का प्रमुख अंग बने 'मनोविज्ञान' का वर्तमान युग में अत्यन्त उत्कर्षपूर्ण स्थान है। समस्त ज्ञान-विज्ञानवत् मनोविज्ञान के बीज वैदिक एवं महाभारत युग में उपलब्ध है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा का अजस्र स्रोत मनोविज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर पुष्टिवर्धक धाराएँ प्रवाहित करता रहा जो आधुनिक मनोविज्ञान के विविध रूपों, तथ्यों एवं प्रकारों के माध्यम से परिपुष्ट, परिवर्धित एवं संवलित होकर विश्वकर में भारतीय ज्ञान परम्परा रूपी भागीरथी का पावनपीयूष सर्वत्र प्रसारित करती हैं। प्राचीन भारतीय ज्ञानपरम्परा रूप भागीरथी का यह पवित्रपावन प्रवाह निरंतर प्रवाहमान रहे, इसके लिए हम सभी को 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' के उत्तम संकल्प से युक्त रहकर प्रयासरत रहना होगा।

वर्तमान युग में मनोविज्ञान को ''साइकॉलोजी'' कहा जाता है जिसका वास्तव में अर्थ है – ''आत्मा का विज्ञान'' क्योंकि लैटिन भाषा में साइको (Psycho) का अर्थ आत्मा होता है और लोगस (Logus) का अर्थ है 'शास्त्र' या 'ज्ञान'। इसका क्रमिक विकास एक आधुनिक विषय के रूप में हुआ है।

मन की सत्ता एवं मन की अवस्थाओं पर सूक्ष्म विश्लेषण वैदिक युग में प्राप्त थे। अत: मनस, मनोभाव, मन के पहलू सकारात्मकता के महत्त्व को बहुत पहल समझ सके थे। ऋग्वेद में मनस् शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर हुआ है। मरुद्गण, अश्विनी तथा उनके रथ की गति को मन के समान तीव्र बताया गया है। इन्द्र को 'मनस्वान्' भी कहा गया है।

ऋषियों को वह दिव्य दृष्टि ईश्वर प्रदत्त थी जिससे सर्वविध ज्ञान उन्हें प्रत्यक्ष था। डॉ. सीताराम जायसवाल ने अपने ग्रंथ में स्पष्टत: उल्लेख किया है कि भारतीय मनीषियों का योगदान पश्चिम भी स्वीकार करता है। डॉ. जायसवाल ने 'ब्रेट' के अमरग्रंथ ''History of Psychology'' का निर्देश करते हुए स्पष्ट किया है कि इस ग्रन्थ के प्रथम भाग के 18वें अध्याय में ब्रेट में भारतीय मनोविज्ञान का उल्लेख किया है।

पाश्चात्य मनोविज्ञान की सभी शाखाएँ यथा – मनोरचनावाद, व्यवहारवाद, अस्तित्ववाद, व्यापारवाद, सम्बन्धवाद अर्थात् संयोजनवाद, अभ्यनुबंधनवाद अर्थात् अभ्यनुकूलनवाद, प्रकार्यवाद, व्यक्तित्त्वादादि सभी वैदिक युग से प्रभावित प्रतीत होती है। पाश्चात्य मनोविज्ञान के मनोरचनावाद की सभी धारणाएँ वैदिक युग में उत्स रूप में प्राप्त होती हैं। ऋक् संहिता में अनेकश: मन-विवेचन प्राप्त होता है।

ऋग्वेद में स्पष्ट किया गया है कि वृत्तियाँ मन के पीछे दौड़ती हैं। वैदिक ऋषियों ने मन का सम्बन्ध शरीर एवं आत्मा दोनों से स्वीकार किया है क्योंकि आत्मा ही उसे नियन्त्रित करती है। मन का स्थान दशेन्द्रियों से परे है श्रेष्ठ है। अपितु दश इन्द्रियों से पृथक् 'एक' कहा गया है।

अथर्ववेद में यह शंका भी व्यक्त की गई है कि मन का आधार क्या है? मनस् को वेद में 'देव' कहा गया है जो अन्त:करण एवं अन्तरिन्द्रिय को द्योतित करता है वह संकल्पशक्तियुक्त है।

ऋग्वेद में इन्द्र को मनस्वान् भी कहा गया है।

मन के पक्ष-वैदिक वाङ्मय के मतानुसार शरीर, मन और आत्मा एक ही है। शरीर से लेकर मन की सूक्ष्म स्थितियों तक इसके पांच स्तर हैं –

(1) अन्नमय कोश (2) प्राणमय कोश (3)विज्ञानमयकोश (4) मनोमय कोश (5)आनन्दमय कोश।

उपनिषदों में इसका पर्याप्त विवेचन किया गया है। स्थूल से आरम्भ कर सूक्ष्म तक जाने की भारतीय परम्परा व प्रक्रिया का निर्वाह ऋषियों की सूक्ष्मदृष्टि का ही परिचायक था।

मन को ही मनुष्यों के बन्धन व मोक्ष का कारण कहा गया है।

उपनिषदों में मन के लिए पाँच शब्दों का प्रयोग किया गया – मनस्, प्रज्ञा, ब्रह्म, विज्ञान और चित्त। अन्यत्र इन्द्रिय को विषय से, विषयों को मन से, मन को बुद्धि से, आत्मा को प्रबल माना गया है।

उपनिषद् प्रदत्त मन विवेचन अत्यन्त सूक्ष्म एवं विशद है। बृहदारण्यकोपनिषद् में स्पष्ट किया गया है कि काम, संकल्प, श्रद्धा, अश्रद्धा, धैर्य, अधैर्य, बुद्धि, भय ये सब मन ही है। अर्थात् ये समस्त मनोभाव उपनिषद् काल में सूक्ष्मरीति से वर्णित किए गए।

प्रसिद्ध पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक फ्रायड द्वारा मन को विश्लेषित करते हुए अपने सिद्धान्त में मन के तीन स्तरों चेतन, अवचेतन एवं अचेतन को स्वीकार किया गया है। उपनिषदों में उसका वर्णन जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति एवं तुरीय के माध्यम से किया गया है। माण्डूक्योपिनषद् में मन की चार अवस्थाएँ परिगणित की गई हैं – (1) विश्वजागृतावस्था (2) तेजस् (सुषुप्ति अवस्था) (3) प्रज्ञा (गहननिद्रा) (4) तुरीयावस्था।

आधुनिक मनोविज्ञान में जो अवधारणा complex की है उससे भी मिलता-जुलता वर्णन कठोनिषद् में हृदयग्रंथि और मुण्डकोपनिषद् में 'गुहाग्रंथि' शब्दों के माध्यम से प्राप्त होता है –

''यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येहग्रन्थय:
अथ मर्त्योऽमर्त्यो
भवेत्येतावद्ध्यनुशासनम्।''
तरति शोकं तरति पाप्मानं
गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तो
अमृतो भवति।

स्वप्न एवं सुषुप्ति (मन की अवस्था)

स्वप्न एक मानसिक प्रक्रिया है जिसका विश्लेषण प्राचीन एवं आधुनिक सभी मनोवैज्ञानिकों ने किया है –

ता: सर्वा: स्वापायामसि
यो न जीवोसि न मृतो
देवानाममृतगमोऽसि स्वप्न

जीवित और मृत से परे बताते हुए स्वप्न को जाग्रत एवं निद्रावस्था से अलग विश्लेषित किया गया है।

फ्रायड के मतानुसार स्वप्न नींद के समय का मस्तिष्क का जीवन है।

स्वप्न सम्बन्धी सूक्ष्म विश्लेषण उपनिषदों में उपलब्ध होता है। मन स्वप्न में अपने भोग की सामग्री स्वयं निर्मित कर लेता है। प्रश्नोपनिषद् में निद्रा के स्वरूप का उत्तम विवेचन उपलब्ध है। स्वप्न की सुखद स्थिति में मानव प्रसन्न होता है और दुखद स्थिति में मनुष्य स्वप्न में रोने लगता है।

पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों में अरस्तू ने स्वप्न को मानसिक क्रिया कहा। फ्रायड ने स्वप्न को जाग्रत अवस्था के अनुभवों की प्रतिच्छाया बताया। फ्रायड ने स्वप्न की पाँच कार्य पद्धतियों का भी वर्णन किया - (1) संक्षेपण (2) विस्थापन (3) नाट्यीकरण (4) प्रतीकीकरण (5) परवर्ती विस्तार

एडलर ने अपने व्यक्तित्व मनोविज्ञान सिद्धान्त में हीनताग्रंथि एवं श्रेष्ठताग्रंथि को महत्त्वपूर्ण स्वीकार किया है। उनके मतानुसार प्रत्येक व्यक्ति स्वयं में पूर्ण नहीं होता। उसमें कुछ न कुछ कमी अवश्य होती है। इसी आधार पर उन्होंने आंगिक और मानसिक दो कमियों का उल्लेख कर उसका सूक्ष्म विश्लेषण किया है।

यूरोपीय मनोविज्ञान की दृष्टि से विचार करें तो स्पष्ट होता है कि यूरोपीय विचारकों में प्लेटो, अरस्तू, गेलेन, संत, आगस्टाईन, फ्रांसिस बेकेन, ऐने, देकार्त सदृश विद्वानों ने मनोविज्ञान के विकास में योगदान दिया है।

प्लेटो ने भी मानव मन और शरीर के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए हैं। अरस्तू ने भी मन और शरीर के अटूट सम्बन्ध को स्वीकार कर मन की महत्ता को स्वीकारा है। ह्यूम एक जाने माने मनोवैज्ञानिक थे उन्होंने मानसिक कार्यों का आधार प्रत्यक्ष ज्ञान को स्वीकार किया है।

इस प्रकार सभी क्रियाकलापों का आधार मन है, ऐसा वेद स्वीकार करता है। मन की विलक्षणता को स्वीकार करते हुए प्रतिपादित किया गया है कि प्राणी के शरीर में रहता हुआ भी मन के द्वारा ही सर्वजगत् का व्यवहार चलता है।

विषयः संनद्धो मनसा चरामि

पाश्चात्य मनोविज्ञान में प्रकार्यवाद का मूल यही वैदिक मन्त्र प्रतीत होते हैं। अतः स्पष्टतः कहा जा सकता है कि पाश्चात्यों का मनोरचनावाद वैदिक युग से पूर्णतः प्रभावित था। कहीं-कहीं तो पूर्व सिद्धान्त ही अनुकरण किए गए हैं। जो भावना मन के विषय में वैदिक ऋषियों ने प्रदान की उसी के आधार पर पाश्चात्य विद्वानों ने अपने सुदृढ़ सिद्धान्तों का निर्माण किया।

पाश्चात्य मनोविज्ञान में भी वैदिक संहिताओं से प्रेरणा प्राप्त कर मन या चित्त के तीन स्तर व्यक्त किए गए हैं -

1. चेतन (conscioucus)
2. अवचेतन (sub conscioucus)
3. अचेतन (unconscioucus)

चेतन अर्थात् चित्त का वह रूप जो जाग्रत अवस्था में मानव के हृदय की परिधि से जुड़ जाता है। मानसिक या शरीर सम्बन्धी क्रियाओं के सम्पादन में जो स्वाभाविक आत्मज्ञान प्राप्त होता है। वह चेतन मन का स्वरूप है। निष्क्रिय रहने पर भी मन चेतनशील रहता है। ऐसा ही विवेचन वैदिक ऋषि करते हैं -

''यज्जाग्रतो दूरमूदेति देवं
तदुसुप्तस्य तथैव दूरंगमम्।
ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे
मनः शिवसंकल्पमस्तु।।''

अवचेतन-चेतन और अचेतन के बीच की स्थिति में अवचेतन मन की अवधारणा विद्यमान रहती है। चेतन ज्ञान जहाँ स्पष्ट होता है अवचेतन उतना ही अस्पष्ट होता है। कुछ मानवीय अनुभव जो चेतन मन द्वारा संभव नहीं हो पाते वह अवचेतन की श्रेणी में आ जाते हैं। इसका भी विवेचन वैदिक वाङ्ग्मय में उपलब्ध होता है -

अत्रैष देवः स्वप्ने महिमानमनुभाति...
दृष्टं चादृष्टं च श्रुतं चाश्रुतं चानुभूतं
चाननुभूतं च सच्चासच्च सर्वं पश्यति।

वैदिक ग्रन्थों में चित्त और हृदय का मन के साथ ही प्रयोग देखने को मिलता है। यथा - ''चेतो हृदयम्''। मन और चित्त की समानता और सामंजस्य की बात की गई है।

अचेतन मन-मन की यह तृतीय अवस्था मानी जाती है क्योंकि इसका ज्ञान

व्यक्ति को नहीं रहता। अचेतन मन एक ऐसी गुफा के समान होता है जिसमें विस्मृत अनुभव स्मृतियाँ अव्यवस्थित ढंग से विद्यमान रहती हैं।

मनोवृत्तियाँ

मनोभावों का सूक्ष्म विश्लेषण वैदिक मंत्रों में प्राप्त होता है। क्योंकि भावनाओं का सम्बन्ध मन से है। 'विजयी' व्यक्ति का मन अनेक प्रकार का हो जाता है। प्रिय, अप्रिय, हर्ष आलस्यादि मनोभावों का विस्तृत विवेचन वैदिक युग में प्राप्त होता है।

प्रत्येक प्राणी मननशीलन होने के कारण मनोवृत्तियों से युक्त होता है। वैदिक संहिताओं में मानव की मनोवृत्तियों का सूक्ष्म विवेचन एवं विश्लेषण ऋषियों की उस पूर्णदृष्टि का परिचायक है जो मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू का सर्वविध निरीक्षण में संलग्न थे। क्रोध, भय, घृणा, प्रेम, मोह लोभ, काम, दया, भ्रातृप्रेम, आनन्द, दुखादि सभी मनोभाव वैदिक संहिताओं में यत्र-तत्र वर्णित हैं।

अतएव भारतीय मनोवैज्ञानिक मन के स्वरूप को जानने के उपाय ही नहीं वर्णित करते अपितु उसकी शक्तियों को उभारने का उपाय भी बताते हैं। मन के मनोभावों का सूक्ष्म विवेचन इस प्रकार उपलब्ध प्राप्त होता है –

''प्राणान्प्रपीड्येह संयुक्तचेष्टः
क्षीणे प्राणे नासिकयोच्छ्वसीत
दुष्टाश्वयुक्तमिव वाहमेनं
विद्वान्मनो धारयेताप्रमत्तः।''

इसके अतिरिक्त आनन्द मोदादि का वर्णन वैदिकयुग में उपलब्ध होता है –

''आनन्दा मोदाः
प्रमुदोऽभीमोद्युदश्च ये।
हासो नरिष्ठा नृत्तानि
शरीरमनुप्राविशद्।''

वैदिक युग की भांति यूरोपीय दार्शनिक प्लेटो ने मनोभावों या संवेगों के विषय में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है कि भावनाओं और संवेगों का संबंध आत्मा या मन से है न कि शरीर से। जबकि अरस्तू के अनुसार संवेगों का सम्बन्ध सुखमय एवं दुखमय अनुभवों से है।

चेतन तत्त्व और आत्मा-वैदिक युग में आत्म तत्त्व का अत्यन्त सूक्ष्म रूप में वर्णन प्राप्त होता है, जो पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों हेतु प्रेरणास्रोत बना है।

''आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः
श्रोतव्यो मन्तव्यः''
''अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो
यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः''

व्यवहारवाद – पाश्चात्य मनोविज्ञान की मुख्य शाखा है, उसका भी विवेचन वैदिक युग में उपलब्ध है।

मानव के समाज में उसके व्यवहार, परस्पर मेलजोल और लगाव इत्यादि के आधार पर व्यक्तित्व तीन प्रकार है – (1) बहिर्मुखी (2) अन्तर्मुखी (3) उभयमुखी। वैदिक संहिताएँ और ब्राह्मणग्रंथ कर्म एवं प्रवृत्तिप्रधान बहिर्मुखी व्यक्तित्व का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। यथा –

अग्निना रयिमश्ववत्
पोषमेव दिवेदिवे।
अथास्मभ्ये सहवीरं रयिंदा।
ताः न उर्जे दधातम्।
महे रणाय चक्षसे।
अतः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं
पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।

इन सभी वर्णनों के अतिरिक्त – ब्रह्मेतु माम्। मधुमेतु माम् ब्रह्मेव मधुमेतु माम्। अर्थात् ब्रह्मरूप मधु की कामना की गई है। श्रद्धा, विश्वास, भक्ति भी व्यक्तित्व के तत्त्वों में गिने गए हैं – श्रद्धया देवो देवत्वमश्नुते।

व्यक्तित्व निर्धारक तत्त्वों का भी वैदिक युग में विवेचन प्राप्त होता है। यथा वंश परम्परा या अनुक्रम का वर्णन दर्शनीय है –

अहमस्मि वीरिणी इन्द्रपत्नी
ममपुत्रः शत्रुहणो ऽथो मे
दुहिता विराट् अताहमस्मि...

व्यवहारवाद के भी उत्स वैदिक युग में उपलब्ध थे। देवताओं के व्यवहार एवं प्रकृति विवेचन द्वारा निर्धारक तत्त्वों में व्यवहार का प्रमुख स्थान था।

प्राकृतिक परिवेश, सामाजिक परिवेश, माता-पिता का व्यवहार, मनोवैज्ञानिक परिवेशादि कारणों का व्यक्तित्व के निर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान है – देवी जन्वियजीजनत्।

अतः व्यवहार सम्बन्धी विवेचन भी वैदिक युग में उपलब्ध होता है, जो व्यवहार के समर्थक विचारकों को प्रभावित करता रहा है। विविध देवताओं के व्यवहार विवेचन से वैदिक युग में व्यवहारवाद का सूत्रपात हो चुका था।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व व्यक्ति विशेष का गुणधर्म एवं पहचान है। पाश्चात्य देशों में व्यक्तित्व का अध्ययन 19वीं शताब्दी में मानव व्यवहार की एक शाखा के रूप में हुआ। व्यक्ति का नाम, आचार, व्यवहार, वेशभूषा, गुण, विद्या, बुद्धि, कर्मकौशल, दक्षता, अभिरुचि, आत्मविश्वास और स्वाभिमान व्यक्तित्व की श्रेणी में आते हैं।

वैदिक साहित्य में व्यक्तित्व सम्बन्धी तथ्य सर्वत्र उपलब्ध होते हैं क्योंकि व्यक्तित्व ही मानव का आईना है। उसे ही निजी विशेषताएँ व्यक्त होती है। पारिवारिक परिवेश को वैदिक युग में प्रमुख स्थान दिया गया है –

''यः सकृत्यापकं कुर्वीत्,
कुर्यादेनत्ततोऽपरम्''
''सहृदयं सामंस्यमविद्वेषं कृणोमि वः
अन्यो अन्यमभिहर्यत
वत्सं जातमिवाहन्या''

इसके अतिरिक्त व्यक्तित्व के प्रकार एवं व्यक्तित्व के विकास हेतु विविध उपाय भी वैदिक युग में महत्त्वपूर्ण था।

अभिप्राय यह है कि वैदिक युग में मानव की सत्ता एवं उसका व्यक्तित्व एक अहं विषय था तथा उसके एवं उसके परिवार के विकास एवं परस्पर सम्बन्धों के विषय में भी पर्याप्त चर्चा होती रही थी। एक दूसरे के प्रति स्नेह, प्रेम,

वात्सल्य सब कुछ यहाँ वर्णित है-

नित्यं च सुनू पित्रोः उपस्थे
नित्यं च सुनू तनयं दधानाः।

अतः वैदिक युग मनुष्य को अच्छी राह निर्देशित कर अच्छा बनाने वाला शास्त्र है। पाश्चात्य विचारक एवं मनोवैज्ञानिक भी व्यक्तित्व को मनोविज्ञान का मुख्य अंग मानते हुए उसका विवेचन करते हैं। सम्प्रदाय में सम्पूर्ण व्यक्ति के अध्ययन पर बल देते हैं। गेस्टाल्डवादी सम्प्रदाय के समर्थक विचारक भी सम्पूर्ण व्यक्ति का अध्ययन करते हैं। ये अपने अध्ययन में अन्तर्दृष्टि का विशिष्ट योगदान मानते हैं।

वैदिक युग में पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों से आगे बढ़कर विभिन्न मनोचिकित्साओं एवं दिशाओं का भी निर्देश किया गया जिसका पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों में अभाव है। वैदिक युग के मन्त्रों में वह उत्साहदायिकी शक्ति एवं तत्त्व विद्यमान हैं जो व्यक्ति को मनोरोगों से बाहर निकालने में अत्यन्त समर्थ है -

अथर्ववेदो वेदः सोऽमिति
भैषजं निगतेद्।
वि ते भिनद्मि मोहन,
वि योनिं वि गवीनके
वि मातरं च पुत्रं च वि कुमारं
जरायुणावज रायु पद्यताम्
''अमुक्था यक्ष्मात्''

संभवतः कोई शाखा या कोई पक्ष ऐसा अछूता रहा हो जो पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों हेतु आधारभित्ति का कार्य न कर पाया हो।

वस्तुतः सम्पूर्ण आधुनिक मनोविज्ञान को सुदृढ़ व सुस्थिर धरातल देने का श्रेय वैदिक युग को जाता है। क्रांतिदर्शी ऋषि अद्भुत मेधायुक्त होने के साथ-साथ अत्यन्त दूरदर्शी भी थे। उन्हें यह आभास हो गया था कि सभ्यता व संस्कृति के विकास के साथ अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याएँ मुँह खोले हर युग के मानव को ग्रसित करने हेतु तैयार बैठी हैं। अतः परिणामस्वरूप उन ऋषियों ने सिसकती मानवता को अपनी आशीर्वादात्मक छाया से सभी मनोवैज्ञानिक समस्याओं से निकालने हेतु सम्पूर्ण मार्ग निर्देशित करने का कार्यभार संभाला जिसे पश्चादवर्ती मनोवैज्ञानिकों ने सुनिर्मित सिद्धान्तों के रूप में प्रस्तुत कर मनोविज्ञान के क्षेत्र में क्रांति लाने का कार्य किया।

वैदिक ऋषि पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों से भी बहुत आगे बढ़कर सभी आधियों के मूल तत्त्वों के निवारण के उपाय भी निर्दिष्ट करते हैं बृहदारण्यकोपनिषद् में कहा गया -

कामक्रोधलोभमोह
मदमात्सर्य मित्यरिषड्वर्गः।

''न वित्तेनः तर्पणीयो मनुष्यः'' कहकर संतोष भावना एवं अरिषड्वर्ग के विजय की प्रेरणा देते हुए औपनिषदिक ऋषि श्रेय और प्रेय का अन्तर भी सूक्ष्म दृष्टि से समझा जाते हैं -

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ
विविनक्ति धीरः।
वयोःश्रेयः आददानस्य
साधु भवति।।

किसी भी सिद्धान्त में श्रद्धा रखते हुए धन का स्वामी व्यक्ति स्वयमेव बन जाता है उसके लिए आधि व्याधि पालने की आवश्यकता नहीं रहती -

''श्रद्धया विन्दते वसुः।''

हमेशा लक्ष्य उच्च रखते हुए रहने की शिक्षा देता हुआ वैदिक ऋषि आत्मविश्वास का संदेश देता है ताकि सभी मनोवैज्ञानिक आंधियाँ एवं समस्याएँ दूर हो सकें - **''उद्यानं ते पुरुष नावयानम्''**

''आत्मानं विद्धि'' का संदेश मनोवैज्ञानिक समस्याओं से जूझने एवं उन्हें पराजित करने की अद्भुत शक्ति रखता है। तभी कहा गया -

''एना वयं पयसा पिन्वमाना
अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः।''

इसी प्रकार, भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपम ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता में भी मनोविज्ञान के तथ्य अत्यन्त सूक्ष्मता से वर्णित हैं। श्रीमद्भगवद्गीता विभिन्न मनोवैज्ञानिक तथ्यों की वह पवित्र गंगा है जो विविध मनोवैज्ञानिक धाराओं को अपने भीतर समाहित किए हुए है उसमें जितना अवगाहन किया जाए उतने ही गहनतत्त्व प्रकट होते जाते हैं। आज के युग में मनोद्वन्द्व, मनोरचनाएँ, निराशा, तनाव, कर्महीनता आदि मनोवैज्ञानिक समस्याएँ जो मानवजाति को पथभ्रष्ट एवं ग्रसित करती जा रही हैं उस समय भगवान कृष्ण कहीं सखा रूप में, कहीं आत्मविश्लेषण के शिक्षकरूप में कहीं सही पथप्रदर्शक गुरु के रूप में तथा सबसे अधिक एक मनोचिकित्सक अथवा मनोनिर्देशक के रूप में अपना अनुपम दैवीय रूप प्रसारित कर जाते हैं, क्योंकि उनकी मुख्य उद्घोषणा थी -

''यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवतिभारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्।।''

वर्तमान युग की मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं में से मुख्य 'मनोद्वन्द्व' है क्योंकि मानव प्रतिस्पर्धा की दौड़ में अपने को सिद्ध करने की इच्छा से वह विकल्पों का आश्रय लेता है तथा पगपग पर उसे मनोद्वन्द्वों से संघर्षरत रहना पड़ता है। मन में उत्पन्न विभिन्न मनोद्वन्द्व व्यक्ति को कोई भी निर्णय नहीं लेने देते ओर वह 'किंकर्त्तव्यविमूढ़ता' की स्थिति में आ जाता है। मन की गति अबाध है। 'मन' का विवेचन एवं उसे अपनी प्रकृति बताते हुए श्रीकृष्ण का कथन है-

भूमिरापोऽनलो वायुः
खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकारः इतीयं मे
भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।।

मन की चंचलता से उत्पन्न विभिन्न 'मनोद्वंद्व' भी सर्वदा तरंगायित रहते हैं। अर्जुन के मन में उठने वाली विविध तरंगों एवं लहरों का विहंगम चित्रण एक सामान्य मानव की मन की विविध अवस्थाओं का अनुपम प्रस्तुतीकरण है। मनोद्वन्द्वों की यह सेना अपने क्षेत्र को विस्तारित करती है

तथा 'प्रयत्नशील' को भी अपने पाश में बांध लेती है यथा भगवद्गीता में कहा गया–

''यततोऽपि कौन्तेय
पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि
हरन्ति प्रसभं च।।''

वास्तव में मनोद्वन्द्वों से घिरा अर्जुन की दिग्भ्रमित हो रहा था–

''न च शक्नोम्यवस्थातुं
भ्रमतीव च मे मनः।''

सौभाग्य से उसके समीप श्रीकृष्णवत् गुरुविद्यमान थे जो उसे विविध मनोद्वन्द्वों रूपी दानवों से बचाकर सुरक्षित निकाल ले जाते हैं और द्वन्द्वभाव या बहु-विकल्पों का मूल कारण भी उसे स्पष्ट करके समझाते हुए कहते हैं–

''सत्वं रजस्तम इति
गुणा प्रकृतिसम्भवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो
देहे देहिनमव्ययम्।।''

वर्तमान युग में जब व्यक्ति बहुविकल्पों में से सही को चुन पाने में असमर्थ हो 'अल्पनिद्रा' का शिकार होता है तब श्रीकृष्ण मन को प्रबल बनाने का संदेश देकर अपने निर्णय पर अडिग रहने का उपदेश देते हैं–

''तानि सर्वाणि संयम्य
युक्त आसीत् मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि
तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

तथा –

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा
नियम्यारभतेऽर्जुनः।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगसक्तः
स विशिष्यते।।

भगवद्गीता में दृष्टिपात करने पर अर्जुन परिस्थिति से पीछे हटने की स्थिति में सबसे अधिक था क्योंकि कहा गया –

''विसृज्य सशरं
चापं शोकसविष्टमानसः
दृष्टेवं स्वजनं कृष्ण
युयुत्सुं समुपस्थितम्।
सीदन्ति मम गात्राणि
मुखं च परिशुष्यति।।''

इस परिस्थिति में अर्जुन प्रतिनिधि है उस युवावर्ग का जो प्रथमतः तो कोई कार्य प्रारम्भ करने से पहले भ्रमित रहते हैं परन्तु जब आरम्भ कर भी लेते हैं, तो थोड़ी सी विघ्न बाधा होने पर ही सबकुछ छोड़छाड़ कर बैठ जाते हैं तब वे निराशा, दबाव, चिन्ता एवं कर्महीनता की आंधियों का शिकार होने लगते हैं। इन आंधियों में निराशा वर्तमानयुग की प्रमुख आंधी है जिसका निवारण श्रीमद्भगवद्गीता में सुष्ठुरूपेण प्रस्तुत किया गया है। आज के युवावर्ग को सबसे अधिक आवश्यकता है। भगवानसदृश निर्देशक एवं दिशाबोधक की जो दिग्भ्रमित तथा विदेशी चाक-चाक्य से पूर्णतया प्रभावित युवापीढ़ी को मुक्त करा उन्हें स्वधर्म एवं स्वंसंस्कृति का ज्ञान कराएँ –

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मे भयावहः

तथा

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः

यह निराशा की ही अवस्था थी जिसने अर्जुन सदृश महायोद्धा की ऐसी दशा कर दी थी कि धनुष उसके हाथ से छूट रहा था और शरीर कंपनयुक्त था–

वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्वक्तत्रैव परिदह्यते।

श्रीकृष्ण उसकी (अर्जुन) की दुर्बलता को तुरन्त समझ कर विभिन्न प्रकार से उसे समझाने का प्रयास करते हुए अनेक मुख्य मनोवैज्ञानिक तथ्य उद्घाटित कर जाते हैं–

क्लैब्यं मा स्म गमः
पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं
त्यक्त्वोतिष्ठ परंतप।
कुतस्त्वया कश्मलमिदं
विषमे समुपस्थिते
अनार्यमजुष्टमस्वर्ग्यम
कीर्तिकरमर्जुन।।

कोई कृत्य तुम नहीं करोगे जो तुम्हारी अद्वितीय योद्धारूप कीर्ति के विरुद्ध हो क्योंकि –

संवितस्यचाकीर्ति मरणादतिरिच्यते।

श्रीकृष्ण अर्जुन को उसकी शक्ति का एहसास कराने हेतु परन्तप, पार्थ, कौन्तेय, धनञ्जय आदि नामों से सम्बोधित कर उसका मनोबल बढ़ाकर उसे उसके मुख्य-कार्य हेतु नियुक्त करने का प्रयास करते हैं। वही सही मार्गदर्शन आज के युवावर्ग एवं धन की चकाचौंध से पीड़ित मानवजाति के लिए अनिवार्य है कि 'निराशा का क्षण' अपने ऊपर हावी न होने दें।

निराशा के उपरान्त तनाव भी वर्तमानयुग की मुख्य मनोवैज्ञानिक समस्या है जो एक भयंकर दानववत् मुँह फैलाकर मानवजाति को अपने भीतर समाहित करती जा रही है। श्रीकृष्ण दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व को नियंत्रित व्यवस्थापित कर तनावरहित रहने का उपदेश देते हैं तथा

सम्पूर्ण जगत् को अपने में अहं मानते हैं।

मतः परतरं
नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा।।

'तनाव' जो वर्तमान युग की मुख्य समस्या है इसके कई कारण है जिसमें अत्यधिक आसक्ति एक मुख्य कारण है। ऐसे समय में भगवान पुनः हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं तथा प्रत्येक आसक्ति से मुक्त रहकर कर्म करने का उपदेश देते हैं –

असक्तबुद्धिः सर्वत्र
जितात्मा विगतस्पृहः।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां
सन्यासेनाधिगच्छति।।
एतान्यपि तु कर्माणि संघं
त्यक्त्वा फलानि च।
कर्त्तव्यानि मे पार्थ
निश्चितं मतमुत्तमम्।

'कार्य' की परिणति जब सफलता में नहीं होती तो व्यक्ति तनावग्रस्त होकर अनेक बीमारियों का शिकार बन जाता है। ऐसे में ही मनोचिकित्सक के रूप में अपना चक्र घुमाते हुए भगवान अवतरित होते हैं और व्यक्ति को समझाते हुए कहते हैं कि ''तुम्हारा धर्म तो कर्म ही करना है, फल की इच्छा नहीं। इच्छारहित कर्म ही सभी आंधियों का निवारण है।

''कर्मण्येवाधिकारस्ते न
फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा
ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।''

यदि आद्यतनीय मानव भगवान कृष्ण की बात माने तो तनाव का राक्षस उसे स्पर्श भी न कर पाए क्योंकि योग रूपी कर्म का कौशल मानव को सभी आंधियों से मुक्त करने में सक्षम है –

''योगस्थः कुरु कर्माणि
संघं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा
समत्वं योग उच्यते।।''

एवमेव व्यक्ति विशेष के प्रति अत्यधिक आसक्ति, उसके जाने का दुख अधिकांश मानवों को तनावयुक्त कर जीवन जीने के दृष्टिकोण से ही विमुख कर देता है, उनके प्रति भगवान का कथन है कि आत्मा तो अमर है उसके लिए शोक व्यर्थ है, उसने तो केवल शरीर का ही परिवर्तन किया है। श्रीकृष्ण का यह उपदेश किसी के मरते हुए व्यक्ति में भी प्राण फूंक सकता है।

''वासांसि जीर्णानि यथा
विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णाणि-
अन्यानि संयाति नवानि देही।।

''अरिषडवर्ग'' के पाश में फंसा प्राणी विविध कर्मफल भोगों को भोगता हुआ कभी धन की लालसा, कभी शक्तियाँ पद की लालसा से पीड़ित होकर भयंकर यथार्थता का वर्णन कर श्रीकृष्ण कहते हैं–

''ध्यायतो विषयान्पुंसः
संगस्तेषूपजायते।
संगात्सञ्जायते कामः
कामात्क्रोधोऽभिजायते।।
क्रोधाद्भवति संमोहः
सम्मोहादस्मृति विभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो
बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।''

इसी श्रृंखला में 'बुद्धिनाश' अर्थात् 'सही वक्त पर सही निर्णय न लेने की क्षमता' तथा 'कर्महीनता' उसे जकड़ लेती है। तब भी भगवानश्री तुरन्त निर्णय लेने की अर्जुन को प्रेरित करने के सम्पूर्ण मानव जाति को संदेश देते हैं। यही आजकल के उद्योगपतियों हेतु मुख्य संदेश है।

हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुतिष्ठ कौन्तेय
युद्धाय कृतनिश्चयः।।

वास्तव में अकर्मण्यता या कर्महीनता ही विविध समस्याओं विशेषतः तनाव, कुण्ठा, द्वेष का मुख्य कारण है उनके (कर्महीनों के) प्रति श्रीकृष्ण का वक्तव्य ध्यातव्य है –

''नियतं कुरु कर्म त्वं
कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते
न प्रसिद्धेदकर्मणः।।''

उनके उपदेश से सभी मानसिक चक्रव्यूह कट जाते हैं। मेरे मत में तो आज मानवजाति इसी प्रतीक्षा में है कि कभी तो संभवतः ईश्वर स्वयं पीताम्बर धारण करके आएँ और मनोद्वन्द्व एवं मनोविज्ञान सम्बन्धी सभी दुःखों से अति मानवजाति को अपनी आशीर्वादात्मक मुद्रा में, मन्द मन्द मुस्कुराते हुए संदेश देते हुए यह कहें–

''सर्वधर्मान्परित्यज्य
मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो
मोक्षिष्यामि मा शुचः।।''

अतएव उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत के संदेश का पालन करते हुए हमें अपने वैदिक ज्ञान और उसमें निहित मनोवैज्ञानिक तत्त्वों का सूक्ष्म निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण करना चाहिए जिससे प्रेरणा प्राप्त कर आधुनिक मनोविज्ञान की विविध शाखाएँ प्रस्तुत हुईं और वर्तमान समय में पल्लवित, पुष्पित हो रही है। परन्तु मुख्य धारा का सूत्रपात वैदिक युग में ही हो गया था। अतएव वैदिक धरोहर को संभालना एवं संजोना हमारा मुख्य व प्रथम ध्येय होना चाहिए।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा का अजस्र स्रोत मनोविज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर पुष्टिवर्धक धाराएँ प्रवाहित करता रहा जो आधुनिक मनोविज्ञान के विविध रूपों, तथ्यों एवं प्रकारों के माध्यम से परिपुष्ट, परिवर्धित एवं संवलित होकर विश्वकर में भारतीय ज्ञान परम्परा रूपी भागीरथी का पावनपीयूष सर्वत्र प्रसारित करती हैं। प्राचीन भारतीय ज्ञानपरम्परा रूप भागीरथी का यह पवित्रपावन प्रवाह निरंतर प्रवाहमान रहे, इसके लिए हम सभी को 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' के उत्तम संकल्प से युक्त रहकर प्रयासरत रहना होगा। ❑

मानविकी और भारतीय ज्ञान परम्परा

डॉ. शशि शेखर दास
सहायक शिक्षक,
दर्शनशास्त्र विभाग
मारवाड़ी कॉलेज,
रांची (झारखण्ड)

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में ऋषियों के अलग-अलग तपोवन होते थे, वह शहर के कोलाहल और विलासिता से दूर जंगल में होते थे, जहाँ का वातावरण बिल्कुल शांत होता था पक्षियों के मधुर स्वर सुनाई पड़ते थे और झरनों के पानी से संगीत की ध्वनि निकलती थी, ऐसे स्वच्छ वातावरण में ऋषि विद्यार्थियों को शांतिपूर्ण तरीके से ज्ञान देते थे। एक-एक तपोवन में 60-60 हजार विद्यार्थी विद्या अध्ययन करते थे फिर भी इतनी शांति होती थी कि यदि एक सुई भी जमीन पर गिर जाए तो उसकी आवाज सुनाई पड़ जाए, किंतु आज 100 विद्यार्थी में 5 शिक्षक होते हैं फिर भी शांतिपूर्ण वातावरण नहीं होता, बार-बार उन्हें चुप कराने के लिए शिक्षक को चिल्लाना पड़ता है। आज ना तो शिक्षक के प्रति विद्यार्थी के मन में पहले जैसा आदर है और ना ही शिक्षक के मन में विद्यार्थी के प्रति प्रेम। तपोवन काल का एक प्रसंग है जब विद्यार्थी नभग अपने गुरु से विदा लेते हैं तब गुरु के पास जाते हैं और कुछ बोल नहीं पाते, वैसे गुरु जिन्होंने उन्हें 14 साल तक अपने पास रखा है और माँ बाप से बढ़कर प्यार दिया है उनसे दूर होना यह गुरु और शिष्य दोनों के लिए असहनीय था। नभग इतने भारी हृदय में होते हैं कि वह बोल नहीं पाते कि मैं जाता हूँ और ऋषि भी इतना आत्मीयता से विद्यार्थी को प्यार दिए होते हैं कि वह कह नहीं सकते कि अब तुम जाओ इस अवस्था में, इस विदाई के अवसर पर उनके आँखों से अश्रु धारा प्रवाहित होती है, अंत में गुरु अपने हृदय में काबू रखकर कहते हैं कि तुझे समाज में बहुत काम करना है अब तू जा और कर्मयोग? फिर शिष्य गुरु का चरण स्पर्श कर विदा लेते हैं। तपोवन काल में भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप दो प्रकार की शिक्षा दी जाती थी एक जीवन की शिक्षा और दूसरी जीविका की शिक्षा। जीवन की शिक्षा सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य थी चाहे वे मानविकी के हो, भौतिक शास्त्र के हो, जीव विज्ञान के हो, अर्थशास्त्र, रसायन विज्ञान, भाषा विज्ञान, कृषि विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान या अंतरिक्ष विज्ञान इत्यादि। ऋषि तपोवन का माहौल ऐसा बनाते थे कि विद्यार्थी व्यावहारिक तौर पर संस्कार को उठाते थे। शिक्षा और संस्कार में थोड़ा अंतर है, शिक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जैसे हम कुत्ते-बिल्लियों को भी प्रशिक्षित करके उनसे अलग-अलग कारनामे करवाते हैं किंतु संस्कार उठाया जाता है। एक ऐसा वातावरण बनाया जाता है और ऐसी-ऐसी कहानियाँ रची जाती है जिससे व्यक्ति खुद-ब-खुद संस्कार को उठा लेता है, जैसे बच्चों को वीर, तेजस्वी, निडर बनाना हो तो अभिमन्यु की कहानी, नचिकेता की कहानी जो यमराज से भी नहीं घबराया, नाबि, वररुचि, नभग, उत्तम, ध्रुव, प्रहलाद इत्यादि कहानियों के द्वारा बच्चों को संस्कारित किया जा सकता है। उसी प्रकार युवाओं को संस्कार युक्त बनाने के लिए त्यागराज, अर्जुन, राम, कृष्ण, देवव्रत भीष्म इत्यादि प्रेरणा स्रोत हो सकते हैं।

ऋषियों के जीवन से भी संपूर्ण मानव जाति को प्रेरणा मिलेगी, महर्षि पराशर,

महर्षि जमदग्नि, परशुराम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, वेदव्यास, याज्ञवल्क्य, सुमनतू, महर्षि गौतम, भृगु ऋषि, महर्षि व्यशमपायन इत्यादि ऋषियों के जीवन प्रेरणा स्रोत हो सकते हैं। इनके जीवन मूल्यों से विद्यार्थी संस्कार पा सकते हैं। आज की शिक्षा भौतिकवादी शिक्षा है, यह केवल जीविकोपार्जन की बात सिखाती है, किंतु मानवीय मूल्यों के तरफ यह ध्यान नहीं देती जिसके कारण आज हम एक नंबर का डॉक्टर तो बना लेते हैं किंतु वह थर्ड क्लास का भाई सिद्ध होता है, हम एक नंबर के इंजीनियर तो बना लेते हैं किंतु वह थर्ड क्लास का पति सिद्ध होता है, हम एक नंबर का वकील बना लेते हैं किंतु थर्ड क्लास का बेटा सिद्ध होता है, इसका कारण यह है कि इन्हें जीवन की शिक्षा नहीं मिली होती है, यह केवल जीविका की शिक्षा पाकर डॉक्टर इंजीनियर और वकील इत्यादि बने होते हैं, इसलिए ऐसे इंजीनियर के एक गलत साइन पर बड़े-बड़े पुल, इमारतें गिर जाती हैं, इनके व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण कितने लोगों की जान चली जाती हैं, यही हाल सभी विषयों के साथ होता है, इसका सबसे बड़ा कारण यह होता है कि यह सभी मानवीय मूल्य की शिक्षा लिए ही नहीं होते हैं।

तपोवन काल में जब विद्यार्थी 14 विद्या और 64 कलाओं में निपुण होकर निकलता था तब यदि उस रास्ते से यदि राजा भी गुजर रहा होता था तो वह अपनें हाथी से नीचे उतर कर उस विद्यार्थी का चरण कमल को धोता था, इतना उस विद्यार्थी की मान होती थी। राजा को यह विश्वास होता था कि यह विद्यार्थी पूरे जगत को बदलने की क्षमता रखता है, आज के विद्यार्थी को तो यह भी भरोसा नहीं रहता कि डिग्री लेने के बाद उसे नौकरी मिलेगी या नहीं जबकि आज की शिक्षा को जीविका की शिक्षा कहा जाता है।

आज यदि कोई विद्यार्थी असभ्य आचरण करता है तो गाँव के बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि क्या तुम स्कूल या कॉलेज में यही सीखते हो, किंतु आज तो कहीं भी जीवन की शिक्षा दी ही नहीं जाती है तो बच्चे भला मानवीय मूल्यों को कहां से सीखेंगे? हमारे ऋषि इस बात को समझते थे इसलिए उन्होंने जीविका के साथ-साथ जीवन की शिक्षा देना भी जरूरी समझा। आज सभी के घर में टीवी सेट है, सोफा सेट है, फर्नीचर सेट है किंतु लाइफ अपसेट है, इसका मुख्य कारण यह है कि हमने ऋषियों के द्वारा बताए हुए ज्ञान परंपरा को भुला दिया है, उसे जीवन में आत्मसात नहीं किया है, इसलिए आज परिवार बिखर गया है, समाज टूट गया है, वसुधैव कुटुंबकम् की उच्च भावना रखने वाले हम लोग आपस में ही लड़ रहे हैं, विचारों के अभाव में हम त्याग और समर्पण को भूल गए हैं और क्षुद्र स्वार्थी वृत्ति को अपना लिए हैं, श्री राम में तीन-तीन राज्यों का त्याग किया, हम उस देश के वासी हैं जहाँ राजा हरिश्चंद्र ने स्वप्न में दान दिए हुए राज्य को जागृत अवस्था में भी दान कर देते हैं, आज हमें फिर से इस स्वाभिमान को जगाना होगा, हमारे ऋषि भगवान से भी कुछ याचना नहीं करते थे इसलिए वे मुट्ठी बांध कर भगवान की प्रार्थना करते थे, ऐसे अयाचक वृत्ति से जीवन जीने वाले ऋषियों के वंशज हैं। आज हमारा सौभाग्य है कि नई शिक्षा नीति के द्वारा फिर से उस गौरवमय प्राचीन परंपरा को जीवंत करने का अवसर मिल रहा है। भगवान राम महर्षि विश्वामित्र से पढ़ें और भगवान श्री कृष्ण महर्षि सांदीपनी के आश्रम में पढ़े हैं, कहने का तात्पर्य है कि सर्वज्ञाता भगवान होने के बावजूद भी उन्होंने भारतीय परंपरा को निभाने हेतु तपोवन जाकर शिक्षा ग्रहण की है। वहाँ पर यह जमीन में चटाई बिछाकर सोए हैं, तपोवन में चाहे राजा हो या रंक सभी को एक ही तरह से खाना पीना और रहना होता था, यह व्यवस्था सभी विद्यार्थियों में एकता का भाव भरती थी और ऊँच-नीच, अमीर-गरीब के भेद को मिटाती थी। ❑

आज हमारा सौभाग्य है कि नई शिक्षा नीति के द्वारा फिर से उस गौरवमय प्राचीन परंपरा को जीवंत करने का अवसर मिल रहा है। भगवान राम महर्षि विश्वामित्र से पढ़ें और भगवान श्री कृष्ण महर्षी सांदीपनी के आश्रम में पढ़े हैं, कहने का तात्पर्य है कि सर्वज्ञाता भगवान होने के बावजूद भी उन्होंने भारतीय परंपरा को निभाने हेतु तपोवन जाकर शिक्षा ग्रहण की है। वहाँ पर यह जमीन में चटाई बिछाकर सोए हैं, तपोवन में चाहे राजा हो या रंक सभी को एक ही तरह से खाना पीना और रहना होता था, यह व्यवस्था सभी विद्यार्थियों में एकता का भाव भरता था और ऊँच-नीच, अमीर-गरीब के भेद को मिटाता था।

भारतीय ज्ञान-परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा-नीति

रविकान्त सनाढ्य

सेवानिवृत्त प्राचार्य , कॉलेज- शिक्षा -विभाग, भीलवाड़ा (राज.)

भारतीय ज्ञान-परंपरा अत्यन्त समृद्ध रही है। हमारे वैदिक ऋषियों के पास ज्ञान का अमूल्य भण्डार तथा अनुसंधान की दिव्य दृष्टि थी। यही कारण है कि कालान्तर में शून्य के आविष्कार से लेकर बेतार का तार, वायुयान-निर्माण, ग्रह-नक्षत्रों की चाल, अंतरिक्ष में ग्रहों की परस्पर दूरी, सूर्य एवं चन्द्रग्रहण, क्लोन विज्ञान, दूरदर्शन की दिव्यदृष्टि, चिकित्सा विज्ञान, अणु-परमाणु सिद्धान्त, वास्तुविज्ञान, पर्यावरण, पराविज्ञान, रासायनिक प्रक्रिया से स्वर्ण-निर्माण आदि सभी क्षेत्रों में भारत ने अपना वर्चस्व स्थापित किया।

शून्य का आविष्कार समग्र विश्व के लिए एक अमोघ वरदान सिद्ध हुआ। हमारा सारा विज्ञान और तकनीकी ज्ञान आज शून्य के बल पर ही फल-फूल रहा है।

बे-तार के तार का श्रेय भारत के जगदीशचन्द्र बसु को जाता है। इनके पक्ष में ठोस प्रमाण भी हैं किन्तु कई प्रकार की दुरभिसंधियों के कारण मारकॉनी ने इस श्रेय को झपट लिया।

हमारा ज्योतिष विज्ञान भी अपने आप में अन्यतम रहा है। पाश्चात्य जगत् से पहले हमारे ऋषियों ने काल-गणना का बिलकुल सही आकलन कर पंचांग बना लिए। भूकंप के पूर्वानुमान का गहन अनुभव भी हमारे पुरखों को भलीभाँति था। प्रकाश वर्ष और ग्रहों की परस्पर दूरी, ब्रह्माण्ड और आकाशगंगाओं की जानकारी भी हमारे मनीषियों को पर्याप्त थी।

श्री दुर्गासप्तशती में रक्तबीज की उत्पत्ति निरी कल्पना-मात्र नहीं है। रामायण और महाभारत काल में ब्रह्मास्त्र और अन्य चामत्कारिक अस्त्र-शस्त्र हमारी प्रोन्नत परमाणु तकनीक ही तो थे। लक्ष्मणरेखा, शब्दवेधी बाण आदि भी हमारे परमाणु-विज्ञान में दक्षता के उदाहरण रहे हैं। चिकित्सा विज्ञान और शल्य क्रिया के महाविज्ञानी भी हमारे यहाँ अपनी निष्णातता का परिचय दे रहे थे। रासायनिक प्रक्रिया से भी स्वर्ण बनाने का असाधारण कार्य हमारे निपुण विज्ञानियों के बस की बात थी। हमारा समग्र वैदिक साहित्य पर्यावरण-संरक्षण को प्रमुखता देता हुआ हमें यह संदेश देता रहा है कि पर्यावरण की शुचिता से ही हमारा कल्याण संभव है। हमारे वेदों में पर्यावरणपरक स्तुतियों का ही आधिक्य है। परामनोविज्ञान और योगशास्त्र, तंत्र-मंत्र और यंत्रों का प्रभावी प्रयोग हमारे यहाँ की एक अनुपम विरासत रहा है।

भारतीय भाषा विज्ञान भी अत्यन्त व्यावहारिक और सुविचारित धरातल पर लिखा गया है। वर्ण, विभक्तियाँ, कारक वाक्य रचना, शब्द- निर्माण, मुहावरे, लोकोक्तियाँ और समग्र व्याकरण के

विविध पक्ष भी वृहद् स्तर पर देखा जाए तो भाषाविज्ञन के ही अंग हैं। यद्यपि व्याकरण और भाषाविज्ञान दो पृथक् विषयों के रूप में मान्य हैं पर यहाँ हम विराट परिप्रेक्ष्य को ले रहे हैं। संस्कृत भाषा से हिन्दी का विकास भी भारतीय भाषाविज्ञान के अन्तर्गत ही आता है। भाषाविज्ञान के स्वनिम, रूपिम आदि, ध्वनिविज्ञान और अर्थ-विज्ञान आदि भी हमारे यहाँ प्रारंभ से ही अनेक भारतीय भाषाओं को परिष्कृत करने में अपनी महती भूमिका निभाते रहे हैं। हमारी भाषाओं की शब्द- रचना, लिपि-सौन्दर्य, देवनागरी में शिरोरेखा का प्रावधान, वर्णों की सुन्दर आकृति, वर्णमाला का उच्चारण स्थान व प्रयत्न के आधार पर निर्धारण संयुक्ताक्षर, संधि, बलाघात, समास आदि हमारे भारतीय भाषाविज्ञान की स्वर्णिम उपलब्धियाँ रही हैं जिन्होंने अन्य भारतीय लिपियों को भी उपकृत किया है।

इस आलेख के माध्यम से हम हमारे विमानन-विज्ञान की चरम उपलब्धियों की चर्चा विशेष रूप से करना चाहेंगे। प्रथम तो 'विमान' शब्द का अस्तित्व में आना ही इस बात का प्रमाण है कि हम इस क्षेत्र में

हमारे प्राचीन ज्ञान-विज्ञान से हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति को समन्वित किया जाना एक स्वागत योग्य कदम होगा। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ज्योतिष, कर्मकाण्ड, वैदिक गणित, वास्तुविज्ञान, पराविज्ञान, अंतरिक्ष-विज्ञान आदि को पाठ्यक्रमों में जोड़ा जाना चाहिए।

कितने समृद्ध थे। हमारे प्राचीन ग्रंथों में 'पुष्पक' आदि विमानों की चर्चा निरर्थक नहीं है। मानव ने पक्षियों को आकाश में उड़ते देखा तो उसमें यह ललक सहज रूप से सृष्टि के आरंभिक काल में ही जाग गई होगी कि काश, हम भी इस तरह उड़ पाएँ। विमानों का आविष्कार कोई कल्पना कदापि नहीं हो सकती।

उस समय स्वर्ण को उच्च ताप पर ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता था, इसके साक्ष्य भी हमारे प्राचीन ग्रंथों में उपलब्ध हो जाते हैं। महाकवि केशवदास का काल भी राइट बंधुओं से बहुत पहले का है, तब केशवदास जी ने रामचन्द्रिका में 'विमान' शब्द का मोहक प्रयोग श्री हनुमान् जी के लंकागमन हेतु प्रस्थान करने के प्रसंग में लिखा है, वह छन्द द्रष्टव्य है-

हरि कै सो वाहन कि
विधि कै सो हेम-हंस,
लीक-सी लिखत नभ-
पाहन के अंक को।
तेज के निधान राम-
मुद्रिका-विमान कैधों,
लक्ष्मण को बान छूट्यो
रावन निसंक को।
गिरि-गजगंड ते उड़ान्यो
सुबरन अलि,
सीता-पद पंकज सदा
कलंक रंक को।
हवाई सी छूटी के
सोदास आसमान में,
कमान में सो गोला छुट्यो,
हनुमान चल्यो लंक को।।

दूसरे कवित्त में और एक पंक्ति देखिए - विधि कै समान हैं विमानीकृत राजहंस, बहुल बिबुधयुत मेरु सो अचल है।

उपर्युक्त दोनों ही कवित्तों में तथा अन्य भी एक कवित्त में जब इन्द्र ने राम को अकेले बिना विमान से युद्ध करते देखा तो अपना विमान भेज दिया। केशव दास जी ने इतनी जगहों पर विमान का वर्णन किया है, यह कोरी कल्पना नहीं हो सकता।

'लीक-सी लिखत नभ पाहन के अंक को' पंक्ति इस सदर्भ में विचारणीय है। आज भी हम देखते हैं जब जेट या नेट चलते हैं तो उनके आकाश मार्ग से गुजरने के पश्चात् धुएँ की एक लकीर-सी

आसमान में खिंच जाती है। आज से लगभग आठ सौ साल पहले कवि केशवदास 15 वीं शती में 'विमान' और 'सोने की सुनहरी लीक' आसमान में खिंच जाने का वर्णन कर रहे हैं। यह जानकारी किसी शास्त्र में उन्हें अंकित की हुई मिली होगी, तभी तो उन्होंने ऐसा वर्णन किया होगा! रामायण में भी आकाशमार्ग से रावण द्वारा सीता को अपहृत कर लंका ले जाना और मार्ग में जटायु का भरसक प्रतिरोध करना ये सब घटनाएँ इतिहास-सम्मत हैं। आकाश में दिग्भ्रम की स्थिति पैदा न हो जाए, इसके लिए कपास आदि भी जरूर रहे होंगे। कहने का अभिप्राय यह है कि हमारे यहाँ अत्यन्त पुरातनकाल से ही ज्ञान-विज्ञान का अक्षय भण्डार रहा है तथा इसके कुछ ही अंश की तह तक आज का विज्ञान पहुँच पाया है, यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

हमारे प्राचीन ज्ञान-विज्ञान से हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति को समन्वित किया जाना एक स्वागत योग्य कदम होगा। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ज्योतिष, कर्मकाण्ड, वैदिक गणित, वास्तुविज्ञान, पराविज्ञान, अंतरिक्ष-विज्ञान आदि को पाठ्यक्रमों में जोड़ने का पुरजोर समर्थन किया है।

गत वर्ष संत रमेश भाई ओझा के पोरबन्दर स्थित आश्रम के बाबडेश्वर संस्कृत महाविद्यालय में एक अत्याधुनिक भाषा-विज्ञान प्रयोगशाला एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई जो एक स्तुत्य अनुष्ठान है। वहाँ संस्कृत के विद्यार्थी अनुसंधान में उत्साह के साथ प्रवृत्त हैं। इस प्रकार की पढ़ाई और पाठ्यक्रम हमारे विश्वविद्यालयों को भी पहल करके शुरु करनी चाहिए।

आधुनिक विज्ञान ने 'रिमोट' का तथाकथित आविष्कार क्या कर लिया, अपने आप को बहुत बड़ा तीसमारखाँ समझने का भ्रम पाले बैठे हैं। हमारे यहाँ सड़क पर जादू बताने वालों को डुगडुगी बजाते हुए दो डंडियों को बिना किसी डोर के ठुमक-ठुमककर नचाते हुए हर किसी ने अपने बचपन में देखा है। ग्रहों की दृष्टि जातक की जन्मकुंडली पर पड़ने से उसके जीवन पर क्या-क्या प्रभाव होंगे, इसकी संपूर्ण जानकारी से यह सहज ही पता चलता है कि 'रिमोट-विज्ञान के क्षेत्र में भी हम कितने आगे थे।

हमारी एक प्राचीन पद्धति टीकाकरण (वेक्सिनेशन) भी कितनी निराली थी!

भले ही प्रकारान्तर से रूप उसका भिन्न रहा हो, तथापि शीतला-पूजन और साल में एक दिन बासी भोजन वेक्सिनेशन के आधारभूत सिद्धान्त को प्रतिपादित करता है। टीकाकरण का यही तो सिद्धान्त है कि शरीर में रोग-प्रतिरोधी क्षमता विकसित करनी है तो उस रोग का सामना करने के लिए वही जीवाणु शरीर में अत्यल्प मात्रा में प्रविष्ट कराया जाए।

आधुनिक रेकी-विज्ञान भी हमारी प्राचीन ऊर्जा-आह्वान-पद्धति का ही एक परिवर्तित स्वरूप है।

हमारे सारे कर्मकाण्ड स्वरूप-भिन्नता में ऊर्जा का मंत्रों द्वारा आह्वान् ही हैं। हम लोग अपने घर में मांगलिक कार्य होने पर यज्ञ करवाते हैं।

यह यज्ञ क्या है? यह ब्रह्माण्डोय ऊर्जा का आह्वान् ही तो है! सर्वप्रथम हम अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपिवा। यःस्मरेत्पुडरीकाक्षः स बासह्यायाभ्यन्तरः शुचिः।। कहकर स्वयं को पवित्र करते हैं , तत्पश्चात् यज्ञ-स्थान से अवांछित नकारात्मक शक्तियों को स्थान छोड़ने हेतु मंत्र पढ़ते हैं - अपसर्पन्ति ये सर्पाः शिवाज्ञयाः विनश्यति।

तदनन्तर कलश में वरुणदेव, सागरों तथा नदियों, सप्तद्वीपों चारोंवेदों एवं सारे तीर्थों का आह्वान करते हैं। नवग्रह स्थापन, षोडष्-मातृका, सप्तघृत मातृका आदि की स्थापना के मूल में भी यही रहस्य है कि ब्रह्माण्डीय ऊर्जा यों तो सारी जगह व्याप्त है, पर आह्वान् करते ही वाँछित स्थान पर ठीक उसी तरह प्रकट हो जाती हैं जैसे एक शक्तिशाली लैंस से सूर्य की किरणों को कार्बन पेपर पर एकत्रित रूप में आह्वानित कर कार्बन में प्रकट की जा सकती है।

ग्रामीण-संस्कृति के देवालयों (देवरों) में झाड़ा लगाकर किसी को स्वस्थ करने की मान्यता भी वायु-स्रोत विज्ञान का समर्थन है, अंधविश्वास नहीं। यहाँ वायु का आह्वान् किया जाता है।

हमारे यहाँ सामाजिक उत्सवों पर महिलाएँ गंगा माई का पूजन कर सिर पर कलश में गंगाजल धारण करके गंगोज (गंग+ओज) का आह्वान् करती हैं तो थोड़ी हो देर में गंगा की ऊर्जा उन महिलाओं के कलश में तथा तन में प्रकट हो जाती है। हमारे प्राचीन ज्ञानविज्ञान पर अभी शोध के अनेक आयाम खुल सकते हैं। ❑

अमृतकाल और राष्ट्रीय शिक्षा नीति

धर्मेन्द्र प्रधान
केंद्रीय शिक्षा एवं कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री, भारत सरकार

ज्ञान शक्ति है। भारत की समृद्ध ज्ञान क्षमता वेदों और उपनिषदों में स्पष्ट है। यह वैदिक ग्रंथ सदियों से ज्ञान के विशाल स्रोत के रूप में कार्य कर रहे हैं। नालंदा और तक्षशिला जैसे हमारे प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय हमारी धरोहर हैं। यह अकाट्य सत्य है कि भारत अतीत में अंतरराष्ट्रीय ज्ञान का केंद्र रहा है। समय के साथ, भारत की ज्ञान शक्ति और संपदा ने मुगल, मंगोल, ब्रिटिश, डच और पुर्तगालियों सहित बहुत लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा, जिन्होंने इतिहास की विभिन्न अवधियों में भारत पर आक्रमण किया, जिसके परिणामस्वरूप भारत के ज्ञान संपदा की भी अत्यधिक हानि हुई। लेकिन यह सर्वविदित और स्वीकृत तथ्य है कि आक्रमणकारी हमारी भूमि को लूट सकते थे और हमारे विश्वविद्यालयों को नष्ट कर सकते थे, लेकिन वे हमारी भूमि के गुरुओं और योगियों से सदैव पराजित हुए।

दूसरी औद्योगिक क्रांति के दौरान ब्रिटेन ने दुनिया का नेतृत्व किया, जबकि तीसरी औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व अमेरिका ने किया। आज जब भारत, ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए वैश्विक स्तर पर पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है तो अब समय आ गया है कि यह एक बार फिर ज्ञान का केंद्र बन जाए और नई और उभरती प्रौद्योगिकियों में तेजी से हो रही वृद्धि के साथ अब चौथी औद्योगिक क्रांति में दुनिया का नेतृत्व करे।

इन अपेक्षित परिवर्तनों के बीच 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की वैश्विक ज्ञान महाशक्ति में बदलने का दृष्टिकोण सामने रखा। 260 मिलियन से अधिक स्कूल जाने वाले बच्चों और 40 मिलियन से अधिक उच्च शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों के साथ भारत की शिक्षा प्रणाली वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ी शिक्षा प्रणालियों में से एक है। आम जनता सहित हितधारकों के साथ व्यापक चर्चा के पश्चात 34 वर्ष के अंतराल के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का शुभारंभ किया गया। जैसे-जैसे हम 29 जुलाई, 2023 के करीब पहुँच रहे हैं, हम शिक्षा पर एक 'महाकुंभ' दो दिवसीय अखिल भारतीय शिक्षा समागम के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति की तीसरी वर्षगांठ मना रहे हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पिछले तीन वर्ष महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के साक्षी हैं। भारत के इतिहास में पहली बार, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) को औपचारिक स्कूली शिक्षा प्रणाली में एकीकृत किया गया है। इस साक्ष्य को मान्यता देते हुए कि बच्चे के संपूर्ण मस्तिष्क का 80 प्रतिशत से अधिक विकास आठ वर्ष की आयु से पहले होता है। इसके अतिरिक्त, 3-8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए बुनियादी स्तर के पहले राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा (एनसीएफ - एफएस) के विकास में खेल आधारित शिक्षाशास्त्र पर बल दिया गया है। इस रूपरेखा में बातचीत, कहानियाँ, संगीत, कला, शिल्प, खेल, क्षेत्रीय प्राकृतिक यात्राएँ और सामग्री एवं खिलौनों के साथ इंटरैक्टिव खेल जैसी विभिन्न गतिविधियाँ शामिल हैं। इस दृष्टिकोण के एक उदाहरण के रूप में जादुई पिटारे (जादुई बक्सा) को स्कूलों को अपनाने के लिए तैयार किया गया है।

एनसीएफ-एफएस पर आधारित कक्षा 1 और 2 के लिए पाठ्यपुस्तकें जारी की गई हैं, जो 2026 तक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय निपुण भारत मिशन की पूरक हैं। स्कूली

शिक्षा के लिए आगामी नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन (एनसीएफ-एसई) के अनुरूप लगभग 150 नई पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराई जाएंगी। ये अमृत काल की पुस्तकें होंगी और एनईपी-2020 के तहत बहुभाषी शिक्षा के दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हुए इन्हें कम से कम 22 भारतीय भाषाओं में विकसित किया जाएगा। प्रधानमंत्री ई-विद्या के माध्यम से पाठ्यपुस्तकों के डिजिटल संस्करणों को सुलभ बनाया जा रहा है, जिससे न्यायसंगत और ऑन-डिमांड पहुँच सुनिश्चित की जा रही है। एनईपी की सही भावना का प्रतिनिधित्व करने वाले उभरते भारत के लिए पीएम श्री स्कूल भी पूरे देश में स्थापित किए जा रहे हैं।

एनईपी 2020 ने सामान्य शिक्षा के साथ अपने एकीकरण और मुख्यधारा के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष जोर दिया है। हम स्कूल स्तर पर कौशल कार्यक्रम का शुभारंभ करने के लिए समग्र शिक्षा और कौशल भारत मिशन के बीच सामंजस्य बना रहे हैं। छात्रों और स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों को व्यापक कौशल और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने के लिए स्कूलों में 5000 कौशल केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं। इसके अलावा, एक एकीकृत राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (एनसीआरएफ) पेश किया गया है जो स्कूल, उच्च और कौशल शिक्षा एवं प्रशिक्षण क्षेत्रों में औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा को क्रेडिट रखता है। एनसीआरएफ विभिन्न स्तरों पर एकाधिक प्रवेश और निकास को सक्षम बनाता है, जिससे छात्रों को अपने जीवन में किसी भी समय उच्च शिक्षा प्रणाली में फिर से प्रवेश करने की अनुमति मिलती है। मान्यता के लिए क्रेडिट छात्र के अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) में जमा हो जाएगा।

प्रौद्योगिकी छात्रों को ऑनलाइन डिग्री कार्यक्रम हासिल करने में सक्षम बना रही है, शिक्षार्थियों को अधिक सुग्राह्यता प्रदान कर रही है और विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच बढ़ा रही है। अब स्वयं पोर्टल पर ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के माध्यम से भी क्रेडिट अर्जित किया जा सकता है और जल्द ही, भारत में अपनी तरह की एक डिजिटल यूनिवर्सिटी स्थापित की जाएगी।

वैश्विक नागरिक बनाने के दृष्टिकोण के साथ भारत की ज्ञान परंपराओं पर जोर देकर, इसमें विश्व स्तर पर कहीं भी ज्ञान आधारित समाज बनाने के लिए एक मार्गदर्शक बनने की क्षमता है, खासकर गरीब और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए जो उपनिवेश की छाया से मुक्त होना चाहते हैं। अब जबकि एनईपी अपने चौथे वर्ष में प्रवेश कर रहा है, इसकी सफलता का मतलब 2047 तक विकसित भारत में ज्ञान साझाकरण एवं शांति पर केंद्रित एक वैश्विक विश्व व्यवस्था होगी।

मांग आधारित कौशल को सक्षम करने, एमएसएमई सहित नियोक्ताओं के साथ जुड़ने और उद्यमिता योजनाओं तक पहुँच की सुविधा के लिए एकीकृत इकोसिस्टम को और भी मजबूत किया गया है। हम कौशलपूर्ण उम्मीदवारों की वैश्विक गतिशीलता को सुविधाजनक बनाने पर भी कार्य कर रहे हैं। युवाओं को अंतरराष्ट्रीय मानक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने और कुशल कार्यबल के लिए विदेशी अवसरों को बढ़ाने के उद्देश्य से 30 भारत अंतरराष्ट्रीय कौशल केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं। उद्योग 4.0 की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष रूप से तैयार 330 से अधिक वर्तमान समयानुरूप पाठ्यक्रम विकसित किए गए हैं।

शिक्षण में भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने के लिए कई उच्च शिक्षा संस्थान अब कई भारतीय भाषाओं में तकनीकी कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। एआई अनुवाद उपकरण विभिन्न भारतीय भाषाओं में पाठ्य-पुस्तकों के अनुवाद की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। जेईई, एनईईटी और सीयूईटी जैसी प्रमुख प्रवेश परीक्षाएँ अब 13 भाषाओं में उपलब्ध हैं।

शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण के क्षेत्र में, भारत के संस्थान विदेशों में परिसर स्थापित कर रहे हैं जबकि आईआईटी मद्रास का जांजीबार (तंजानिया) में अपने नियोजित परिसर के साथ वैश्विक रूप से विस्तार हो रहा है, इस महीने के प्रारंभ में प्रधानमंत्री मोदी की उपस्थिति में संयुक्त अरब अमीरात में आईआईटी दिल्ली के परिसर को स्थापित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए गए। उल्लेखनीय है कि विदेशी विश्वविद्यालय भी गुजरात की गिफ्ट सिटी में अपने परिसर स्थापित कर रहे हैं, और निकट भविष्य में विदेशों में एक स्कूल बोर्ड सहित अन्य भारतीय संस्थानों की उपस्थिति का और विस्तार करने की महत्वाकांक्षी योजनाएँ हैं।

अमृत काल के अंतर्गत विकसित भारत का स्वप्न, अमृत पीढ़ी की आकांक्षाओं को पूरा करके ही साकार किया जा सकता है। कामकाजी आयु वर्ग में हमारी लगभग 65 प्रतिशत आबादी के साथ, हमें एक ऐसी उम्र के लिए रूपरेखा तैयार करनी चाहिए जिसमें आजीवन सीखने और कौशल की आवश्यकता हो। वसुधैव कुटुंबकम् की भावना से प्रेरित होकर भारत 21वीं सदी का वास्तविक नेता बनने के मार्ग पर है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस परिवर्तन को वर्तमान वास्तविकता से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वैश्विक नागरिक बनाने के दृष्टिकोण के साथ भारत की ज्ञान परंपराओं पर जोर देकर, इसमें विश्व स्तर पर कहीं भी ज्ञान आधारित समाज बनाने के लिए एक मार्गदर्शक बनने की क्षमता है, खासकर गरीब और उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए जो उपनिवेश की छाया से मुक्त होना चाहते हैं। अब जबकि एनईपी अपने चौथे वर्ष में प्रवेश कर रहा है, इसकी सफलता का मतलब 2047 तक विकसित भारत में ज्ञान साझाकरण एवं शांति पर केंद्रित एक वैश्विक विश्व व्यवस्था होगी। ❑

(साभार - हिन्दुस्थान समाचार)

Embrace Indian Knowledge System, Enrich Higher Education

Mamidala Jagadesh Kumar

Chairman, UGC, and former VC, JNU

By integrating ethical teachings available in IKS into higher education, institutions can aid students in developing a sense of social accountability, compassion, and ethical decision-making.

The University Grants Commission (UGC) plays a key role in shaping and regulating higher education in India. The NEP 2020 has emphasized the promotion of Indian languages, arts, and culture and has recommended blending the Indian Knowledge System (IKS) into curriculums at all levels of education. To enable the seamless integration of IKS with contemporary subjects, the UGC has been proactively promoting measures to facilitate and maintain the rich heritage of the IKS in diverse disciplines passed down through generations of knowledge creators and practitioners. UGC has initiated several efforts to integrate and disseminate the IKS within the contemporary higher education system.

India has a rich and diverse knowledge heritage that evolved over thousands of years in disciplines such as philosophy, arts, sciences, technology, astronomy, mathematics, medicine, economics, political science, and social sciences and ethics. The IKS has the potential to complement and enrich contemporary higher education by providing a more comprehensive understanding of human knowledge, civilization, and cultural heritage and bringing benefits to students, academia, and society at large.

The inclusion of the IKS higher education allows students to appreciate that knowledge is interconnected and interdependent, prompting students to view subjects in a broader context. The IKS results from critical thinking, logical reasoning, and reflective inquiry. Students studying IKS can develop analytical skills and learn to approach problems from diverse perspectives, fostering creativity and scholarly agility.

Studying IKS as part of modern education can foster interdisciplinary research resulting in a harmonious blend of various

knowledge systems. An example is the 5-year integrated B.Sc.-M.Sc. program in Ãyurveda-Biology at the School of Sanskrit and Indic Studies, JNU, introduced in 2020 when I was the Vice-Chancellor. This program is run by 15 faculty members from different schools of JNU and 7 Adjunct Faculty members from outside JNU. The main objective of this program is to study the vast expanse of knowledge in the field of Ãyurvedic and related sciences from the perspective of mainstream contemporary studies in biological sciences.

NEP2020 considers instilling ethics and values in India›s young people as a critical mandate of education for the students to evolve as responsible citizens. The IKS underlines moral values, ethics, and principles for leading a righteous life. By integrating these ethical teachings available in IKS into higher education, institutions can aid students in developing a sense of social accountability, compassion, and ethical decision-making vital for balanced living.

The NEP2020 underlines the importance of awareness and sensitivity toward sustainable development. The IKS promotes the view that human well-being is intertwined with the health and sustainability of the environment. Our students must be conscious of ethical living to minimize environmental deterioration, employ agricultural methods that promote soil fertility, save water, and lessen the dependence on fertilizers, leading to sustainable farming practices. For generations, village communities in India have developed numerous techniques, such as community-based protection of forests, water bodies, and natural resources and the ability to deal with natural disasters and environmental changes, which are essential in modern times for the sustainable administration of local ecosystems. UGC›s guidelines and curriculum framework for environment education at the undergraduate level are expected to cater to students from diverse disciplinary backgrounds and include topics to sensitize students about India›s commitment to achieving sustainable development goals.

UGC recognizes the importance of training faculty members to develop expertise in the IKS to teach and engage students in IKS effectively. In collaboration with the IKS cell established by the Ministry of Education, UGC is now training 1,000 teachers from across India in IKS to familiarize faculty members with the nuances of the IKS. By equipping educators with a deep understanding of IKS, the UGC aims to create a more holistic and culturally enriched learning environment. Faculty members, well-versed in the IKS, can foster a more culturally prudent and inclusive learning environment. This enhances students› appreciation of their cultural heritage and promotes critical thinking and a broader perspective on global issues.

To encourage students to research IKS, UGC has introduced IKS as a subject in the UGC-National Eligibility Test (UGC-NET), a prestigious examination conducted by the National Testing Agency (NTA) on behalf of the UGC. Those who clear the UGC-NET in IKS will become eligible for a Junior Research Fellowship (JRF) award in Indian universities for Ph.D. research in IKS. Such a scheme will provide a steady stream of Ph.D. degree holders in IKS for developing academic and research programs in Universities. UGC has issued guidelines to provide a roadmap of various disciplines of IKS into undergraduate and postgraduate curricula and provide hand-holding to the universities. Three comprehensive courses on IKS in engineering, science and technology, and humanities and social sciences are now available on the SWAYAM platform, which learners can access freely. We do not want IKS to be taught as a sepa-

rate subject. It should be integrated into the regular curricula where possible.

NEP2020 says for purposes of cultural enrichment and national integration, all young Indians should be aware of the rich and vast array of languages of their country and the treasures that they and their literature contain. Multilingualism encourages empathy and better understanding among people from various linguistic backgrounds. Multilingualism helps build effective communication channels and enhances intercultural exchange, paving the way for mutual regard and partnership.

NEP2020 says for purposes of cultural enrichment and national integration, all young Indians should be aware of the rich and vast array of languages of their country and the treasures that they and their literature contain. Multilingualism encourages empathy and better understanding among people from various linguistic backgrounds. Multilingualism helps build effective communication channels and enhances intercultural exchange, paving the way for mutual regard and partnership.

Incorporating the IKS into higher education through Indian languages promotes a feeling of pridefulness and cultural essence among students. It enables them to connect with their heritage and value the contributions of ancient Indian scholars to human knowledge. UGC is already working on bringing out textbooks for undergraduate programs in Indian languages by involving specialists from across the university ecosystem.

UGC also promotes empanelling of Artists/Artisans-in-Residence in Higher Educational Institutions. Taking advantage of the intellectual and creative talent in various art forms and crafts available within the country, which are not formally connected to mainstream academia, HEIs can adopt an integrated initiative to imbibe the skills and creativity of artists and artisans, augmenting the campus teaching-learning resources. It is imperative that the experience and expertise of such individuals outside the mainstream academic system are effectively utilized in our HEIs to meet the needs of the current expansion of the Higher Education System in tune with the NEP2020.

Because India has become a leading nation globally, introducing the IKS into higher education can attract international students seeking to explore the depth and wisdom of India›s traditional knowledge. Learning IKS has the potential to contribute to a holistic understanding of India›s culture.

Incorporating the IKS into higher education curricula is a visionary step that enriches students› learning experiences, promotes cultural understanding, and bridges the gap between traditional wisdom and modern knowledge. By embracing IKS, higher education institutions can create a more holistic, inclusive, and diverse learning environment that prepares students to tackle the complexities of the modern world with wisdom, ethics, and a deep appreciation for their cultural roots. Faculty members must be encouraged to design and teach these courses, fostering a more comprehensive understanding of the IKS among students. The fusion of the IKS with contemporary education marks a crucial stride toward promoting a harmonious and globally relevant higher education system that celebrates the timeless wisdom of India's cultural heritage.

We can expect to see the impact of these initiatives beyond the classroom, as HEIs play a pivotal role in moulding the younger generations to be culturally aware and ethically reliable individuals driving India's advance as a knowledge-driven society. ❑

(Courtesy : The Sunday Guardian)

National Eduction Policy Latest Survey (2023)

Dr. Anchal Meena

Associate Professor
Department of Political Science, Govt. College Rajgarh (Alwar)

The NEP was launched in 2020. Its motto was to educate to encourage and to enlighten. The government's purpose to launch this policy was to develop 21st-century skills in the students of India. The amendments in NEP from the previous education policy strive for Research, Innovation, and Quality. For the seamless implementation of this education policy, the government is willing to give big funds. In 2021, Nirmala Sitaraman said that funds of Rs. 50,000 crores will be given to the National Research Foundation, and Rs. 40 crore to Ekalavya Schools. The New Education Policy 2023 is all about transforming our existing education system. It's a revolutionary approach that aims to bring in modern teaching methods, embrace the power of technology, and promote learning based on practical skills. The ultimate goal is to make education available for everyone, regardless of their background or circumstances. There's a special focus on supporting marginalized communities and creating a more inclusive and fair educational environment. The New Education Policy brings a strong focus on developing 21st-century skills like creativity, critical thinking, and problem-solving. It also suggests the creation of innovative institutions like digital universities and the use of technology to enhance student learning.

The New Education Policy aims to provide quality and equitable education to all children in India. The policy focuses on providing quality and affordable education to all children in the age group of 3-18 years. It focuses holistic and multidisciplinary education instead of rote learning. Students will no longer be graded on how well they remember information from books, but on how well they can use what they know to solve problems in the real world. It emphasizes that the three-language formula will be followed in schools, focusing on the regional language, Hindi, and English. To make it easier for students to learn regional languages, instruction in the first five grades will be taught in those languages instead of English. The school curriculum has been changed to teach more fundamental ideas and

skills. The policy is primarily concerned with how to use technology to make education more accessible and useful. It envisages a system where there is no distinction between rural and urban areas, and all children have access to quality education. The policy proposes several measures to improve the quality of teaching, including mandatory teacher eligibility tests, teacher professional development programs, and teacher education programs at the elementary, secondary, and tertiary levels. The policy also focuses on giving students vocational and technical education, ensuring they are better prepared for the workforce when they leave school. A National Higher Education Regulatory Council will be established under the policy to oversee the regulation of higher education institutions. The policy seeks to provide greater autonomy to higher education institutions and promote academic mobility. Consequently, both public and private universities will be governed by the same regulations. A new 5+3+3+4 education structure will be introduced by this policy, moving away from the current 10+2 system. It aims to increase the Gross Enrolment Ratio in higher education to 50% by 2035. The government has announced that a single regulator will govern all higher education institutes (HEIs), except Medical and Law Colleges. HEIs will now have to answer to a new body, the Office for Students. The Master's degree (MPhil) course will no longer be required.

According to the NEP, learning should be holistic, joyful, stress-free, and a lifelong process. The policy emphasizes critical thinking, exploration, asking questions, engaging in discussions, and teaching based on analysis and comprehensive learning. Regulations for higher education will be light but tight. The policy emphasizes online learning to ensure that students receive education of the highest standard.

NEP 2023 Major Reforms -

The following is the list of all the Major Reforms in Education Policy according to the NEP 2023. There will be no substantial distinction between arts, science, academic, vocational, curricular, and subjects of extracurricular streams. There will be extra emphasis on Foundational Literacy and Numeracy. Substitution of 10+2 structure with a 5+3+3+4 model. No imposition of State Language on Students studying in any State. Permission of taking Board Exams two times for the students. The government will spend 6% of the Country's GDP on Education instead of 1.7%. The Gender Inclusion fund will be fully established. The minimum qualification to apply for the post the teacher will be a 4-year integrated B.Ed Course. There will be an introduction of a Common Entrance Test for admission to HEIs. The Master of Philosophy course will no longer be a part of the education system. The students will be able to opt for different subjects such as arts, crafts, vocation skills, and physical education in Secondary School. The Standards for Board Exams will be set by the body PARAKH (Performance Assessment, Review, and Analysis of Knowledge for Holistic Development) The government will make literature of India and other classical languages part of the syllabus in schools. The exams for students will be held

only in classes 2nd, 5th, and 8th instead of every academic year. School board examinations will continue for 10th and 12th classes, but they will be redesigned to be more holistic and developmental.

PARAKH, a new national assessment platform, will be introduced to assess students' learning and help them analyze their strengths, weaknesses, gaps, and potential. The new system will emphasize the use of local or regional languages and the mother tongue as a medium of education for grades 1 to 5. This policy aligns with the Government's intent to focus on local and regional languages. Sanskrit will be available as an option for all students under the three-language formula at both high school and college levels. Vocational education will be introduced starting from grade 6, also known as middle school. Internships will be incorporated into the vocational education curriculum. The policy includes plans to offer Indian literature and other classical languages as options for students. Students pursuing degrees in these languages will have the freedom to choose the specific language they wish to study and the topics within that language. This freedom extends to students pursuing degrees in other disciplines such as science, technology, engineering, and mathematics. Higher education will experience increased flexibility in subjects, with multiple entry and exit points available for all students. Undergraduate programs can range in duration from three to four years. A one-year certificate will be the minimum duration required, but students can choose alternative routes, such as obtaining a two-year advanced diploma or earning a B. Tech. degree. The new system will prioritize students, focusing on teaching only the most important parts of each subject. The policy aims to make education more meaningful and less reliant on rote learning. The focus will be on critical thinking, discovery, inquiry, discussion, and teaching. Additionally, the needs of students with exceptional circumstances will be considered. The Academic Bank of Credit (ABC) will be established as a digital recognition award for a student's academic performance. ABC can enable universities to verify an institution's credits, or schools can use it to reward or recognize students. It can help keep track of the credits each student has earned over time.

According to the NEP, learning should be holistic, joyful, stress-free, and a lifelong process. The policy emphasizes critical thinking, exploration, asking questions, engaging in discussions, and teaching based on analysis and comprehensive learning. Regulations for higher education will be light but tight. The policy emphasizes online learning to ensure that students receive education of the highest standard. The new system will expand e-learning to include online courses, providing flexibility in terms of location and time for students. By the end of 2040, the aim is to have all universities become multidisciplinary institutions, with each accommodating 3000 or more students. College affiliation will be gradually phased out over the next 15 years. By 2030, there should be at least one large multidisciplinary Higher Education Institution (HEI) built in or near every district. This approach will help schools become more connected to their communities and provide them with growth opportunities. The goal is to assist in achieving 100% youth and adult literacy.❑

Ancient Indian medicinal sciences and its significance in today's era

Sunil Kumar Saini

PhD, Assistant Professor
Department of Zoology
Swami Shraddhanand College, (University of Delhi), Alipur, New Delhi

Ancient Indian medical sciences which is also known as Ayurvedic medicine or simply "Ayurveda", is one of the world's oldest holistic healing systems. Ayurveda is a Sanskrit word that means "knowledge of life" (Ayur = life, Veda = knowledge). Ayurveda is a comprehensive medical system that primarily deals with physical health and healing.It takes a holistic approach to health, considering the interconnectedness of the mind, body, and spirit. This approach is becoming increasingly important in modern healthcare as many chronic diseases are influenced by lifestyle and mental well-being.Ayurveda emphasizes on four key principles to achieve health and prevent illnesses. These are:

1. Doshas : Ayurveda believes that the human body is composed of three fundamental energies or doshas - Vata (air and ether), Pitta (fire and water), and Kapha (earth and water). These doshas govern various physiological and psychological functions and need to be in balance for good health.

2. Individuality : Ayurveda recognizes that each person is unique, with different body types and constitutions. Treatments and lifestyle recommendations are tailored to individual needs.

3. Balance : Health is seen as a state of harmony among the doshas, and disease arises when there is an imbalance.

4. Natural Remedies : Ayurvedic treatments primarily use herbs, minerals, diet, lifestyle changes, yoga, meditation, and specific therapies to restore balance and promote health.

History of Ayurveda

Origin of Ayurveda can be traced back more than 5,000 years to the Vedic period in India. Throughout history, Ayurveda has played a significant role in shaping not only medical practices in India but also influencing traditional medicine systems in other countries, particularly in Southeast Asia and the Middle East. Its principles have also been incorporated into certain aspects of modern holistic medicine.The

Despite these challenges, Ayurveda has survived and experienced a revival in recent times with the help of Indian government. The implications of Ayurvedic science in today's time can be substantial, contributing to a more holistic, personalized, and preventive approach to healthcare. By integrating the strengths of Ayurveda with evidence-based modern medicine, we can create a more comprehensive and patient-centered healthcare system.

evolution of Ayurveda involved numerous scholars, physicians, and practitioners over the centuries. Charaka is often referred to as the "Father of Medicine" in ancient India. He is believed to have lived during the Pre-Classical period and authored the Charaka Samhita, which is one of the foundational texts of Ayurveda. The Charaka Samhita is a comprehensive treatise on internal medicine and covers various aspects of health, diseases, and treatments. Sushruta is another prominent figure in the history of Ayurveda and is considered one of the earliest surgeons in recorded history. He is attributed to the Sushruta Samhita, an important text that focuses on surgical procedures, anatomy, and various surgical instruments. Sushruta's contributions to surgery in Ayurveda are highly regarded.Over the centuries, the knowledge of Ayurveda was passed down through oral traditions, and many dedicated scholars including Vagbhata, Bhavaprakasha, Madhava and Vagish Shastriplayed vital roles in preserving and expanding this ancient medical science. Today, Ayurveda continues to be practiced and researched by numerous individuals and institutions worldwide, contributing to its ongoing evolution and relevance.

Ayurveda: historical challenges and Initiative by present Indian Government for revival

Ayurveda, being one of the oldest medical systems in the world, has faced various challenges throughout its long history. There were four significant challenges that Ayurveda encountered from time to time, these include: 1) foreign invasions, 2) British colonial rule, 3) westernization and 4) lack of documentation and Standardization. During periods of foreign invasions, Ayurveda faced suppression and neglect. Conquerors from outside the Indian subcontinent often sought to impose their own medical systems and cultural practices, leading to a decline in the prominence of Ayurveda. Under British colonial rule, traditional Indian systems of medicine, including Ayurveda, were marginalized, and often viewed as inferior to Western medicine. The British administration promoted Western medical education and discouraged the practice of Ayurveda, leading to a loss of patronage and a decline in its popularity. However, scholars like Vagish Shastri worked tirelessly to preserve and promote Ayurvedic knowledge. They translated ancient Ayurvedic texts into various languages and contributed to its revival in modern times. With the influence of Westernization, there was a shift towards Western medicine and a decline in the traditional practices of Ayurveda. Younger generations often favored the "modern" methods of medicine over traditional healing systems.In the ancient and medieval periods, Ayurvedic knowledge was transmitted orally from generation to generation. This lack of written documentation and standardization led to variations in practice and contributed to challenges in preserving and disseminating Ayurvedic knowledge.

Despite these challenges, Ayurveda has persevered and experienced a revival in recent decades. The presentIndian government has taken significant steps to encourage and promote Ayurveda as an integral part of the healthcare system. Initiatives include the establishment of the Ministry of AYUSH, National Ayurveda Day observance, and the National Ayush Mission. The government has set up Ayurveda institutes and research centers, promoted integrative healthcare, and focused on recognition, regulation, and standardization of Ayurvedic treatments. Internationally,

Ayurveda is being promoted through collaborations and events. Ayurveda tourism has been developed to attract wellness travelers. These efforts aim to preserve and revitalize Ayurveda while making it more accessible and relevant in modern times. Overall, the support and recognition provided by the current Indian government has played a pivotal role in gained renewed interest in Ayurveda both in India and internationally.

Significance of Ayurveda in modern times

In modern times, Ayurveda has gained significance in various research areas due to its holistic approach. Scientists are exploring its potential benefits in herbal medicine, chronic disease management, mental health improvement through practices like yoga and meditation, immune system support, digestive health, pain management with herbal remedies, anti-inflammatory effects of Ayurvedic herbs, dermatology treatments, women's health concerns, and its integration with conventional medicine. The significance of Ayurvedic science in today's time are multifaceted and can have a positive impact on various aspects of modern life and healthcare. Also, in recent years, there has been a growing interest in integrating Ayurvedic principles and herbal medicines into allopathic or conventional medical treatments. This integration is often referred to as "integrative medicine" and aims to provide a more holistic approach to patient care. Here are some examples of how Ayurvedic medicines are sometimes used in allopathic medicine:

1. Turmeric (Curcuma longa) : Turmeric is a popular Ayurvedic herb known for its anti-inflammatory properties. It contains an active compound called curcumin, which has been studied for its potential benefits in managing conditions like arthritis, inflammatory bowel disease, and certain types of cancer. Some allopathic doctors may recommend turmeric supplements or include it as a dietary supplement for its anti-inflammatory effects.

2. Ashwagandha (Withaniasomnifera) : Ashwagandha is an adaptogenic herb used in Ayurveda for its stress-reducing and immune-boosting properties. In some cases, allopathic practitioners may suggest ashwagandha supplements or herbal preparations to support the body's response to stress and improve overall well-being.

3. Triphala: Triphala is an Ayurvedic herbal formulation composed of three fruits - Amalaki (Emblica officinalis), Bibhitaki (Terminalia bellirica), and Haritaki (Terminalia chebula). It is known for its digestive benefits and has been studied for its potential use in alleviating constipation and improving gut health.

4. Brahmi (Bacopa monnieri) : Brahmi is an Ayurvedic herb known for its cognitive-enhancing properties. Some studies suggest that Brahmi may have neuroprotective effects and could potentially be used to support cognitive function and memory.

5. Guggul (Commiphorawightii) : Guggul is a resin obtained from the Commiphorawightii tree, and it is used in Ayurveda to address lipid metabolism and cholesterol imbalances. Some research suggests that guggul may help lower cholesterol levels, and it has been used in integrative medicine for managing hyperlipidemia.

In conclusion, Ayurveda is a comprehensive medical system that primarily deals with physical health and healing. It encompasses the diagnosis and treatment of diseases, the use of medicinal herbs and treatments, diet and lifestyle recommendations, and surgical techniques. During the course of its long history, the ayurvedic science and its literature has faced challenges from the western world. Despite these challenges, Ayurveda has survived and experienced a revival in recent times with the help of Indian government. The implications of Ayurvedic science in today's time can be substantial, contributing to a more holistic, personalized, and preventive approach to healthcare. By integrating the strengths of Ayurveda with evidence-based modern medicine, we can create a more comprehensive and patient-centered healthcare system.❑

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के 3 वर्ष पूर्ण होने पर 'शिक्षा समागम' के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का उद्घाटन भाषण...

नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
भारत सरकार

मंत्रिमंडल के मेरे सहयोगी श्रीमान धर्मेन्द्र प्रधान जी, अन्नपूर्णा देवी जी, राजकुमार रंजन सिंह जी, सुभाष सरकार जी, देश के विभिन्न भागों से आए शिक्षकगण, सम्मानित प्रबुद्धजन, और देशभर से जुड़े मेरे प्यारे विद्यार्थी दोस्तो!

यह शिक्षा ही है, जिसमें देश को सफल बनाने, देश का भाग्य बदलने की सर्वाधिक ताकत है, वो शिक्षा है। आज 21वीं सदी का भारत, जिन लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ रहा है, उसमें हमारी शिक्षा व्यवस्था का भी बहुत ज्यादा महत्त्व है। आप सभी इस व्यवस्था के प्रतिनिधि हैं, ध्वजवाहक हैं । इसलिए 'अखिल भारतीय शिक्षा समागम' का हिस्सा बनना, मेरे लिए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवसर है।

मैं मानता हूँ, विद्या के लिए विमर्श जरूरी होता है। शिक्षा के लिए संवाद जरूरी होता है। मुझे खुशी है कि अखिल भारतीय शिक्षा समागम के इस सत्र के जरिए हम विमर्श और विचार की अपनी परंपरा को और आगे बढ़ा रहे हैं। इसके पहले, ऐसा आयोजन काशी के नवनिर्मित रुद्राक्ष सभागार में हुआ था। इस बार ये समागम दिल्ली के इस नवनिर्मित भारत मंडपम में हो रहा है। और खुशी की बात ये है कि विधिवत रूप से भारत मंडपम के लोकार्पण के बाद ये पहला कार्यक्रम है, और खुशी इसलिए बढ़ जाती है कि पहला शिक्षा से जुड़ा कार्यक्रम हो रहा है।

काशी के रुद्राक्ष से लेकर इस आधुनिक भारत मंडपम तक, अखिल भारतीय शिक्षा समागम की इस यात्रा में एक संदेश भी छिपा है। ये संदेश है – प्राचीनता और आधुनिकता के संगम का! यानी, एक ओर हमारी शिक्षा व्यवस्था भारत की प्राचीन परम्पराओं को सहेज रही है, तो दूसरी तरफ आधुनिक साइन्स और हाइटेक टेक्नोलॉजी, इस फील्ड में भी हम उतना ही तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। मैं इस आयोजन के लिए, शिक्षा व्यवस्था में आपके योगदान के लिए, आप सभी साथियों को शुभकामनाएँ देता हूँ, साधुवाद देता हूँ।

संयोग से आज हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के 3 साल भी पूरे हो रहे हैं। देश भर के बुद्धिजीवियों ने, academicians ने और टीचर्स ने इसे एक मिशन के रूप में लिया, और आगे भी बढ़ाया है। मैं आज इस अवसर पर उन सभी का भी धन्यवाद करता हूँ, उनका आभार प्रकट करता हूँ।

अभी मैं यहाँ आने के पहले पास के pavilion में लगी हुई प्रदर्शनी देख रहा था। इस प्रदर्शनी में हमारे स्किल और एजुकेशन सेक्टर की ताकत को, उसकी उपलब्धियों को दिखाया गया है। नए नए innovative तरीके दिखाए गए हैं। मुझे वहाँ बाल-वाटिका में बच्चों से मिलने का, और उनके साथ बात करने का भी मौका मिला। बच्चे खेल-खेल में कैसे

कितना कुछ सीख रहे हैं, कैसे शिक्षा और स्कूलिंग के मायने बदल रहे हैं, ये देखना मेरे लिए वाकई उत्साहजनक था। और मैं आप सबसे भी आग्रह करूंगा कि कार्यक्रम समाप्त होने के बाद जब मौका मिले तो जरूर वहां जा करके उन सारी गतिविधियों को देखें।

जब युग बदलने वाले परिवर्तन होते हैं, तो वो अपना समय लेते हैं। तीन साल पहले जब हमने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की थी, तो एक बहुत बड़ा कार्यक्षेत्र हमारे सामने था। लेकिन आप सभी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने के लिए जो कर्तव्य भाव दिखाया, जो समर्पण दिखाया और खुले मन से नए विचारों को, नए प्रयोगों को स्वीकार करने का साहस दिखाया, ये वाकई अभिभूत करने वाला है और नया विश्वास पैदा करने वाला है।

आप सभी ने इसे एक मिशन के तौर पर लिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में traditional knowledge systems से लेकर futuristic technology तक उसको बराबर एक balance way में उसको अहमियत दी गई है। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में नया पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए, क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकें लाने के लिए, उच्च शिक्षा के लिए, देश में रिसर्च इकोसिस्टम को मजबूत करने के लिए, देश के शिक्षा जगत के सभी महानुभावों ने बहुत परिश्रम किया है।

देश के सामान्य नागरिक और हमारे विद्यार्थी नई व्यवस्था से भली-भांति परिचित हैं। वो ये जान गए हैं कि '10+2' एजुकेशन सिस्टम की जगह अब '5+3+3+4' ये प्रणाली पर अमल हो रहा है। पढ़ाई की शुरुआत भी अब तीन साल की आयु से होगी। इससे पूरे देश में एकरूपता आएगी।

हाल ही में संसद में नेशनल रिसर्च फाउंडेशन बिल पेश करने के लिए कैबिनेट ने अपनी मंजूरी दे दी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क भी जल्द ही लागू हो रहा है। मुझे बताया गया है कि फाउंडेशन स्टेज यानी 3 से 8 साल के बच्चों के लिए फ्रेमवर्क तैयार भी हो गया है। बाकी के लिए करिकुलम बहुत जल्द ही हो जाएगा। स्वाभाविक तौर पर अब पूरे देश में CBSE स्कूलों में एक तरह का पाठ्यक्रम होगा। इसके लिए NCERT नई पाठ्यपुस्तकें तैयार कर रही है। तीसरी से 12वीं कक्षाओं तक लगभग 130 विषयों की नई किताबें आ रही हैं और मुझे खुशी है कि क्योंकि अब शिक्षा क्षेत्रीय भाषाओं में भी दी जानी है, इसलिए ये पुस्तकें 22 भारतीय भाषाओं में होंगी।

भारत के भविष्य को गढ़ने के आप सबके ये प्रयास एक नए भारत की नींव का निर्माण करेंगे। और मुझे पक्का विश्वास है कि 2047 में हम सबका सपना है, हम सबका संकल्प है कि जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, 2047 में ये हमारा देश विकसित भारत होकर रहेगा। और ये कालखंड उन युवाओं के हाथ में है, जो आज आपके पास ट्रेनिंग ले रहे हैं। जो आज आपके पास तैयार हो रहे हैं, वो कल देश को तैयार करने वाले हैं। और इसलिए आप सबको अनेक-अनेक शुभकामनाएँ देते हुए इस सपने को पूरा करने के लिए हर युवा के हृदय में संकल्प का भाव जगे, उस संकल्प को साकार करने के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा हो, सिद्धि प्राप्त करके रहें, इस इरादे से आगे बढ़ें।

युवाओं को उनकी प्रतिभा की जगह उनकी भाषा के आधार पर जज किया जाना, उनके साथ सबसे बड़ा अन्याय है। मातृभाषा में पढ़ाई होने से भारत के युवा टेलेंट के साथ अब असली न्याय की शुरुआत होने जा रही है। और ये सामाजिक न्याय का भी अहम कदम है। दुनिया में सैंकड़ों अलग-अलग भाषाएँ हैं। हर भाषा की अपनी अहमियत है। दुनिया के ज्यादातर विकसित देशों ने अपनी भाषा की बदौलत बढ़त हासिल की है। अगर हम केवल यूरोप को ही देखें, तो वहाँ ज्यादातर देश अपनी-अपनी नेटिव भाषा का ही इस्तेमाल करते हैं। लेकिन हमारे यहाँ, इतनी सारी समृद्ध भाषाएँ होने के बावजूद, हमने अपनी भाषाओं को पिछड़ेपन के तौर पर पेश किया। इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है। कोई कितना भी इनोवेटिव माइंड क्यों न हो, अगर वो अंग्रेजी नहीं बोल सकता था तो उसकी प्रतिभा को जल्दी स्वीकार नहीं किया जाता था। इसका सबसे बड़ा नुकसान हमारे ग्रामीण अंचल के होनहार बच्चों को उठाना पड़ा है। आज आजादी के अमृतकाल में National Education Policy के जरिए देश ने इस हीनभावना को भी पीछे छोड़ने की शुरुआत की है। और मैं तो यूएन में भी भारत की भाषा बोलता हूँ। सुनने वाले को ताली बजाने में देर लगेगी तो लगेगी।

अब सोशल साइन्स से लेकर इंजीनियरिंग तक की पढ़ाई भी भारतीय भाषाओं में होगी। युवाओं के पास भाषा का आत्मविश्वास होगा, तो उनका हुनर, उनकी प्रतिभा भी खुल करके सामने आएगी। और, इसका एक और लाभ देश को होगा। भाषा की राजनीति करके अपनी नफरत की दुकान चलाने वालों का भी शटर डाउन हो जाएगा। National Education Policy से देश की हर भाषा को सम्मान मिलेगा, बढ़ावा मिलेगा।

आजादी के अमृत महोत्सव में, आने वाले 25 साल बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। इन 25 सालों में हमें ऊर्जा से भरी एक युवा पीढ़ी का निर्माण करना है। एक ऐसी पीढ़ी, जो गुलामी की मानसिकता से मुक्त हो। एक ऐसी पीढ़ी, जो नए-नए Innovations के लिए लालायित हो। एक ऐसी पीढ़ी, जो साइंस से लेकर स्पोर्टस तक हर क्षेत्र में भारत का नाम रोशन करे, भारत का नाम आगे बढ़ाए। एक ऐसी पीढ़ी, जो 21वीं सदी के भारत

की आवश्यकताओं को समझते हुए अपना सामर्थ्य बढ़ाए। और, एक ऐसी पीढ़ी, जो कर्तव्य बोध से भरी हुई हो, अपने दायित्वों को जानती हो-समझती हो। और इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति की बहुत बड़ी भूमिका है।

क्वालिटी एजुकेशन की दुनिया में कई पैरामीटर्स हैं, लेकिन, जब हम भारत की बात करते हैं तो हमारा एक बड़ा प्रयास है- समानता! राष्ट्रीय शिक्षा नीति की प्राथमिकता है- भारत के हर युवा को समान शिक्षा मिले, शिक्षा के समान अवसर मिलें। जब हम समान शिक्षा और समान अवसरों की बात करते हैं, तो ये जिम्मेदारी केवल स्कूल खोल देने मात्र से पूरी नहीं हो जाती। समान शिक्षा का मतलब है- शिक्षा के साथ-साथ संसाधनों तक समानता पहुँचनी चाहिए। समान शिक्षा का मतलब है- हर बच्चे की समझ और चॉइस के हिसाब से उसे विकल्पों का मिलना। समान शिक्षा का मतलब है- स्थान, वर्ग, क्षेत्र के कारण बच्चे शिक्षा से वंचित न रहें।

इसीलिए, National Education Policy का विजन ये है, देश का प्रयास ये है कि गाँव-शहर, अमीर-गरीब, हर वर्ग में युवाओं को एक जैसे अवसर मिलें। आप देखिए, पहले कितने ही बच्चे केवल इसलिए नहीं पढ़ पाते थे क्योंकि सुदूर क्षेत्रों में अच्छे स्कूल नहीं होते थे। लेकिन आज देशभर में हजारों स्कूलों को पीएम- श्री स्कूल के तौर पर अपग्रेड किया जा रहा है। '5जी' के इस युग में ये आधुनिक हाईटेक स्कूल, भारत के विद्यार्थियों के लिए आधुनिक शिक्षा का माध्यम बनेंगे।

आज आदिवासी इलाकों में एकलव्य आदिवासीय स्कूल भी खोले जा रहे हैं। आज गाँव-गाँव इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। दीक्षा, स्वयं और स्वयंप्रभा जैसे माध्यमों से दूर-दराज के बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। अच्छी से अच्छी किताबें, creative learning techniques हों, आज डिजिटल टेक्नोलॉजी के जरिए गाँव-गाँव में ये नए विचार, नई व्यवस्था, नए अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। यानि भारत में पढ़ाई के लिए जरूरी संसाधनों का गैप भी तेजी से खत्म हो रहा है।

आप जानते हैं, National Education Policy की एक बड़ी प्राथमिकता ये भी है कि शिक्षा केवल किताबों तक सीमित न रहे, बल्कि, practical learning इसका हिस्सा बने। इसके लिए vocational education को, general education के साथ integrate करने का काम भी हो रहा है। इसका सबसे बड़ा लाभ कमजोर, पिछड़े और ग्रामीण परिवेश के बच्चों को ज्यादा होगा।

किताबी पढ़ाई के बोझ के कारण यही बच्चे सबसे ज्यादा पिछड़ते थे। लेकिन नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत, अब नए तरीकों से पढ़ाई होगी। ये पढ़ाई interactive भी होगी, साथ-साथ interesting भी होगी। पहले लैब और practical की सुविधा बहुत ही कम स्कूलों में ही उपलब्ध थी। लेकिन, अब अटल टिंकरिंग लैब्स में 75 लाख से ज्यादा बच्चे साइन्स और इनोवेशन सीख रहे हैं। साइन्स अब सबके लिए समान रूप से सुलभ हो रही है। यही नन्हें वैज्ञानिक आगे चलकर देश के बड़े-बड़े प्रोजेक्ट्स को लीड करेंगे, भारत को दुनिया का रिसर्च हब बनाएँगे।

किसी भी सुधार के लिए साहस की जरूरत होती है, और जहाँ साहस होता है, वहीं नई संभावनाएँ जन्म लेती हैं। यही

वजह है कि विश्व आज भारत को नई संभावनाओं की नर्सरी के रूप में देख रहा है। आज दुनिया जानती है कि जब सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी की बात आएगी, तो भविष्य भारत का है। दुनिया जानती है कि जब स्पेस टेक की बात होगी तो भारत की क्षमता का मुकाबला आसान नहीं है। दुनिया जानती है कि जब डिफेंस टेक्नोलॉजी की बात होगी तो भारत का 'लो कॉस्ट' और 'बेस्ट क्वालिटी' का मॉडल ही हिट होने वाला है। दुनिया के इस भरोसे को हमें कमजोर नहीं पड़ने देना है।

बीते वर्षों में जिस तेजी से भारत की औद्योगिक साख बढ़ी है, जिस तेजी से हमारे स्टार्टअप्स की धमक दुनिया में बढ़ी है, उसने हमारी शैक्षणिक संस्थानों का सम्मान भी विश्व भर में बढ़ाया है। तमाम ग्लोबल रैंकिंग्स में इंडियन इंस्टीट्यूट्स की संख्या बढ़ रही है, हमारी रैंकिंग में भी इजाफा हो रहा है। आज हमारे IIT के दो-दो कैंपस जंजिबार और अबू धाबी में खुल रहे हैं। कई दूसरे देश भी अपने यहाँ हमसे IIT कैंपस खोलने का आग्रह कर रहे हैं। दुनिया में इससे मांग बढ़ रही है। हमारे एजुकेशन ecosystem में आ रहे इन सकारात्मक बदलावों के कारण कई ग्लोबल यूनिवर्सिटीज भी भारत में अपने कैंपस खोलना चाहती हैं। ऑस्ट्रेलिया की दो universities गुजरात के गिफ्ट सिटी में अपने कैंपस खोलने वाली हैं। इन सफलताओं के बीच, हमें अपनी शिक्षण संस्थानों को लगातार मजबूत करना है, इन्हें फ्यूचर रेडी बनाने के लिए निरंतर मेहनत करनी है। हमें हमारे इंस्टीट्यूट्स, हमारी यूनिवर्सिटीज़, हमारे स्कूल्स और कॉलेजेज़ को इस revolution का केंद्र बनाना है।

समर्थ युवाओं का निर्माण सशक्त राष्ट्र के निर्माण की सबसे बड़ी गारंटी होती है और, युवाओं के निर्माण में पहली भूमिका माता-पिता और शिक्षकों की होती है। इसलिए, मैं शिक्षकों और अभिभावकों,

सभी से कहना चाहूँगा कि बच्चों को हमें खुली उड़ान देने का मौका देना ही होगा। हमें उनके भीतर आत्मविश्वास भरना है ताकि वो हमेशा कुछ नया सीखने और करने का साहस कर सकें। हमें भविष्य पर नज़र रखनी होगी, हमें futuristic माइंडसेट के साथ सोचना होगा। हमें बच्चों को किताबों के दबाव से मुक्त करना होगा।

आज हम देख रहे हैं कि AI (Artifical Intelligence) जैसी टेक्नोलॉजी, जो कल तक साइन्स फिक्शन में होती थी, वो अब हमारे जीवन का हिस्सा बन रही है। रोबोटिक्स और ड्रोन टेक्नोलॉजी हमारे दरवाजे पर दस्तक दे चुकी है। इसलिए, हमें पुरानी सोच से निकलकर नए दायरों में सोचना होगा। हमें अपने बच्चों को उसके लिए तैयार करना होगा। मैं चाहूँगा कि हमारे स्कूलों में फ्युचर टेक से जुड़े इंटरैक्टिव सेशन आयोजित हों। Disaster management हो, क्लाइमेट चेंज हो, या क्लीन एनर्जी जैसे विषय हों, हमारी नई पीढ़ी को हमें इनसे भी रूबरू कराना होगा। इसलिए, हमें हमारी शिक्षा व्यवस्था को इस तरह से तैयार करना होगा, ताकि युवा इस दिशा में जागरूक भी हों, उनकी जिज्ञासा भी बढ़े।

भारत भी जैसे-जैसे मजबूत हो रहा है, भारत की पहचान और परम्पराओं में भी दुनिया की दिलचस्पी बढ़ रही है। हमें इस बदलाव को विश्व की अपेक्षा के तौर पर लेना होगा। योग, आयुर्वेद, कला, संगीत, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में भविष्य की अपार संभावनाएँ जुड़ी हैं। हमें हमारी नई पीढ़ी को इनसे परिचित करवाना होगा। मुझे विश्वास है, अखिल भारतीय शिक्षा समागम के लिए ये सभी विषय प्राथमिकता में होंगे ही।

भारत के भविष्य को गढ़ने के आप सबके ये प्रयास एक नए भारत की नींव का निर्माण करेंगे। और मुझे पक्का विश्वास है कि 2047 में हम सबका सपना है, हम सबका संकल्प है कि जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा, 2047 में ये हमारा देश विकसित भारत होकर रहेगा। और ये कालखंड उन युवाओं के हाथ में है, जो आज आपके पास ट्रेनिंग ले रहे हैं। जो आज आपके पास तैयार हो रहे हैं, वो कल देश को तैयार करने वाले हैं। और इसलिए आप सबको अनेक-अनेक शुभकामनाएँ देते हुए इस सपने को पूरा करने के लिए हर युवा के हृदय में संकल्प का भाव जगे, उस संकल्प को साकार करने के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा हो, सिद्धि प्राप्त करके रहें, इस इरादे से आगे बढ़ें।

मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं, बहुत बहुत धन्यवाद! ❑

Guidelines for Training/Orientation of Faculty on Indian Knowledge Systems

National Education Policy (NEP) 2020 aims for a complete metamorphosis of the higher education landscape of the country in all its structural, content-related, and pedagogical dimensions. The rich heritage of ancient and eternal Indian knowledge and thought has been a guiding light for NEP-2020. The NEP 2020 has stressed upon the promotion of Indian Languages, Arts and Culture, and has recommended for the integration of IKS into curriculums at all levels of education. Indian Knowledge Systems (IKS) (Bhâratîya-Jñâna-Parampara) encompasses the treasure of knowledge in various disciplines that emerged systematically from the ancient times in India over generations.

Integrating IKS in curriculum for capacity building in faculty and educating the students as envisaged by NEP 2020 requires strengthening the role of the faculty and evolving them into energized, motivated, and capable faculty. The success of NEP 2020 and its special component on Indian Knowledge System relies heavily on the shoulder of the faculty of Higher Education Institutions. Most of the faculty in Higher Education Institutions (HEIs) across the country, although experts in their respective fields, may require additional familiarization efforts for the Indian Knowledge Systems. Teacher training/orientation in the UGC recognized institutions is typically conducted by various agencies such as HRDCs and Pandit Madan Mohan Malviya National Mission on Teachers Training (PMMMNMTT). The faculty are required to attend a mandatory induction program and periodic refresher courses for their continued professional advancement.

The purpose of these guidelines for teacher training during the induction program and refresher courses is to provide a roadmap to familiarize and enthuse faculty about the Indian Knowledge Systems (IKS) and identify strategies to incorporate IKS into their specific classroom teachings. Teachers and Learners will acquire the concept of the Indian Knowledge System and apply it in real life for the advancement and creation of knowledge

1 Background

Integration of IKS in the curriculum at various levels involves an introduction to IKS, it's Scope & History, and amalgamation of fundamental IKS concepts into modern textbooks, leading to developing Indian Thought Models based on available IKS literature, and their application into various contemporary problems solving methods. Understanding that teacher training is important to the success of NEP 2020, UGC constituted a committee of experts to recommend strategies by formulating guidelines for effective teacher training/orientation in IKS. Teacher training/orientation is typically conducted by various agencies such as HRDC, and PMMMNMTT (Malviya Mission). The faculty in the UGC-recognized institutions are required to attend a mandatory induction program (175 hours) and periodically attend the refresher courses which may include subject-specific courses. The refresher courses are required for the continued professional advancement of the faculty in UGC-recognized academic institutions.

2 Guidelines

The needs of faculty coming into the induction program are slightly different from the ones coming for the refresher courses. Faculty coming into the induction program are experts in their topics but may not have deep knowledge about the IKS. The freshly inducted faculty members attending this program may not have the experience of teaching large classes. Therefore, the guidelines are specified separately for the induction/orientation program and the refresher courses. The major purpose of all such training programs shall be to generate a positive attitude towards IKS and promote interest in knowing and exploring more, rather than covering a lot of content related to IKS.

2.1 Induction program

1. Because of the innate nature of IKS, the induction program should not be limited to the facul-

ty's discipline. The content should be broad-based and cover introductory material on all aspects. It would enable teachers to explore the most fundamental ideas that have shaped IKS over the centuries.

2. The IKS Induction programme should ideally be of 30 hours in a 10-10-10 format. The induction module should be divided broadly into three parts:

- Overview of IKS: philosophy, cross-disciplinarity, main approaches and methods, the place of Indian civilization among other classical civilizations and inter-civilizational exchanges, sources of authentic material
- Case studies: to illustrate a few remarkable accomplishments in diverse fields
- Pedagogy related to IKS: Innovative methods to teach IKS including innovative methods propounded by NEP, avoidance of bookish teaching, the use of audiovisual material, possible field studies, some exposure to a few primary sources, possible activities, and micro-research projects, innovative ways to evaluate learning in IKS, avoidance of common pitfalls such as exaggeration or glorification.

3. The IKS-related content should be allocated a minimum of 10% of the total time spent during the induction program. This will translate to about 17.5-20 hours for a typical induction program.

4. All faculty must be exposed to common underlying philosophical foundations across disciplines in the IKS.

5. At least one to two lectures on the fundamental vocabulary of IKS must be conducted to familiarize faculty with the common terms used in IKS.

6. Faculty must be exposed to the primary texts (Sutra Text) of IKS which is required for understanding the sources and origin of IKS. It would help teachers to understand the primary purpose of the text along with the objective, layout, concise and precise way (sutras) of presenting ideas, content, etc.

7. Common pedagogical template should be used for designing IKS subjects for every discipline to maintain consistency and quality in the instruction.

8. For each module, ready access to a wide range of primary and secondary resources must be provided to enable teachers to understand the continuous and vibrant tradition of IKS. These materials may be developed by a team of subject experts and provided to teachers so that there is consistency in the source material used for instruction. Extreme care must be taken to ensure the authenticity and scholarly nature of the content that may be developed for the orientation/induction and refresher courses. Unverified or unverifiable contents must not be used in any case.

9. A database of authentic books, papers, articles, videos should be created. Faculty should be invited to contribute to the database, with a mechanism for peer review to assess the quality of the submitted material.

10. A list of IKS content available in regional languages must be compiled and made available for the benefit of non-English medium teachers.

11. A field visit to nearby IKS related prominent places such as Temples, Gurukuls, Historical sites, Arts & Crafts communities, Ayurvedic Healing Centers, Astronomical Observatories (Jantar Mantar) would enable teachers to appreciate the various manifestations of IKS should be organized.

12. Sharing the life and work of contemporary original thinkers who have made seminal contributions in their field, using IKS framework, would motivate teachers to explore various dimensions of IKS.

13. The faculty must be informed about the opportunities to conduct original research in the IKS domain.

14. Courses must be developed in a range of subjects across natural sciences, social sciences, humanities, engineering, medicine, agriculture, community knowledge systems, fine and performing arts, vocational skills etc, which have IKS content. The courses must have a clear mapping of the traditional subjects in IKS with the modern subjects such a chemistry, mathematics, physics, agriculture, etc.

15. For orienting prospective teachers towards IKS, initiatives should be made to revise UGC syllabus (General Paper) so as to pay sufficient weightage to the IKS content in respective subjects. This would enable prospective teachers preparing for UGC NET examination to get familiarized with IKS. The same should be done in CSIR NET, GATE exams etc.

2.2 Refresher courses

- All faculty must be exposed to a common underlying philosophical foundation across disciplines in the IKS.
- At least one to two lectures on the fundamental vocabulary of IKS must be conducted to familiarize faculty with the common terms used in IKS.
- A strong emphasis must be placed on providing exposure to

the primary texts (Sutra Text) of IKS which is required for deeper understanding.

● The refresher courses must focus on the development of courses under the following categories:

a. Multidisciplinary courses: These courses should serve faculty from at least two disciplines that are closely related. The courses should provide a greater depth and allow the faculty to explore the interdisciplinary aspects of the IKS and to appreciate the cross-disciplinary connections. The primary aim of these courses is to sensitize teachers about the possible interdisciplinary education which is a key aspect of the NEP 2020. As an example, a course on mathematics and astronomy could be conducted and discuss the simultaneous development of mathematical tools and astronomy models in India. This course could serve the needs of faculty in mathematics and astronomy disciplines. A second example course could be a course on civil engineering, architectural engineering and town planning serving the disciplines of civil engineering, architecture and town planning.

B. Discipline-specific courses: The discipline specific courses must be focused on a particular subject. These courses are designed to provide a comprehensive understanding of the discipline in the IKS. The course should be usually designed using multiple source texts as the reference material. For example, a course on chemistry could use Rasaratnakara, Rasaratna-samuchaya, Sarveshwararasayana etc. The ayurvedic concepts of Dravyaguna shastra with the underlying philosophy from the Vaisheshika-Darshana can be taught together with their correlations to biochemistry, biophysics, and process engineering. A course for chemistry students can focus on the aspects related to the herbo-metal and mineral substances from a Dravyaguna perspective while a course for Physics students can focus more on the classification of materials as per the Vaisheshika-Darshana. Designing the course content is a challenge that needs to be carefully thought out by a team of experts in both traditional shastras and modern subjects as most of the IKS subjects do not map cleanly to their modern counterparts. For example, a chemistry-related book such as Rasaratnakara will have a discussion on laboratory construction and furnace construction in addition to discussing purely the chemistry aspects.

C. Specialized courses: Specialized courses are to be designed for providing in-depth and comprehensive knowledge of a particular text. These courses should be open to those faculty who would like to develop specific expertise in a subject on a particular text and must be taught preferably in person by the experts. The courses must be designed to convey the primary purpose of the text along with objective, layout, concise and precise way (sutraic) of presenting ideas, content, etc. It may be envisioned that these courses may only be taught at particular centers where experts are available, and these courses could become the 'USP' of a particular center.

● Courses must be developed in a range of subjects across natural sciences, social sciences, humanities, engineering, medicine, agriculture, community knowledge systems, fine and performing arts, vocational skills, etc, which have IKS content. The courses must have a clear mapping of the traditional subjects in IKS with the modern subjects such as chemistry, mathematics, physics, agriculture, etc.

2.3 Suggestions for effective implementation

3. To connect with the oral tradition of IKS, one practical session on the ancient technique of memorization, with a few examples from primary texts, would be helpful.

4. A few immersive sessions on Yoga, Meditation, Ayurveda, Classical Music should be arranged to give teachers some grounding in the experiential aspects of IKS.

5. One session on Ayurveda with reference to self-exploration (Ayurvedic Personality Test) will be very helpful at a personal level.

6. The higher education institutions with the help of the MoE-IKS cell and all scholars may build a database of authentic books, papers, articles, videos. Faculty members may be invited to contribute to the database, with a mechanism for peer review to assess the quality of the submitted material.

7. Master trainer program could be implemented under Malviya Mission. This would be more cost effective and will bring efficiency in implementation of IKS in right spirit as proposed in these guidelines.

8. Malviya mission centres could be designated as the nodal agencies for preparing reading materials and recorded lectures for training of faculty on the various subjects mentioned in the document for FIP & Refresher Courses and Short term programs. ❑